पञ्चम अध्याय

1. 'भट्टिकाव्यम्' में प्रयुक्त तद्धित प्रत्ययांत शब्दों का संख्या निर्धारण एवं लौकिकाऽलौकिक विग्रह प्रदर्शनपूर्वक व्युत्पत्ति।

प्रथम सर्ग

अभून्नृपः .... स्वयम्।।1।।

1. **सनातनः**–सना भव इति। (सना + ट्युल) सना इति अव्ययात् 'सायं चिरंप्राह्णोप्रगेऽव्ययह्यभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च'[1] इति सूत्रेण 'ट्युल् प्रत्ययः।'

वसुनि .... निरास्थत् ।।3।।

2. **घनवत्**–घनेनतुल्यम् इति। 'तेन तुल्यं क्रिया चेद्वति'[2] सूत्र से वति प्रत्यय। (धन + वति)

पुण्यो .... बह्निरभिप्रणीतः।।4।।

3. **यथा**–येनप्रकारेण। तद् शब्द से 'प्रकारवचने थाल्'[3] सूत्र से थाल् प्रत्यय। (तद् + थाल्) 'त्यदादीनामः' से दकार को अकार आदेश एवं 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप एकादेश होकर। 'तद्वितश्चाऽसर्वविभक्तिः'[4] सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से विभक्ति लोप।

स पुण्यकीर्तिः .... ब्रह्मभिरिद्धबोधैः।।5।।

4. **कल्पब्देश्यदेशीयरः**–'सूत्र से ईषद् के असमाप्त अर्थ में कल्पप् प्रत्यय।

निर्माणदक्षस्य .... मघोनः।।6।।

5. **पद्मासनकौशलस्य**–'कुशलस्य भावः कौशलम्। 'हायनान्तयुवादिभ्योऽण्'[5] सूत्र से युवादि में पठित होने से अण् प्रत्यय। (कुशल + अण) 'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि।

अन्तर्निविष्टोज्जवलरत्नभासो .... गृहेभ्यः।।8।।

6. **गवाक्षः**–गवाम् अक्षिणी इति। (गवाक्षि + अच्) अक्ष्णोऽदर्शनात्'[6] सूत्र से 'अच्' प्रत्यय 'यस्येति च' सूत्र से इ का लोप।

धर्म्यासु .... तिसृषूत्तमासु।।9।।

7. **धर्म्यासु** –धर्मादनपेता धर्म्याः तासु। (धर्म + यत्) धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते'[7] सूत्र से यत् प्रत्यय।

पुत्रीयता .... पुरमृष्यशृंङ्गः।।10।।

8. **वरांगनाभिः** – प्रशस्तानि अंगानि – यासां ता अंगनाः इति। 'अंगात्कलयाणे' सूत्र से 'न' प्रत्यय (अंग + न)। 'अजाद्यतष्टाप्'[8] सूत्र से टाप् प्रत्यय

9. **क्रियावन्** – प्रशस्ता क्रिया यस्य सः। (क्रिया + मतुम्) 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्'[9] सूत्र से प्रशंसना इति। क्रिया से मतुप् प्रत्यय।

10. **मनस्वी** – प्रशस्तं मन: अस्ति यस्य स:। (मनस् + विनि) 'अस्मायामेधास्रजो विनि'[10] सूत्र से मनस् शब्द से विनि प्रत्यय। मनस्विन् पुल्लिंग एकवचन रूप।

11. **ऋष्यश्रृङ्गः**–ऋषीणां समूह: इति। 'पाशादिभ्यो य:'[11] सूत्र से (ऋषि + य) 'य' प्रत्यय। 'यस्येति च' सूत्र से 'इ' का लोप।

एहिष्ट .... सुताऽनुबन्धम् ।।11।।

12. **कर्मठः**–कर्मणि घटते इति। कर्मन् शब्द से 'अठच्' प्रत्यय 'कर्मणि घटोऽठच्'[12] सूत्र से (कर्मन् + अठच्)।

रक्षांसि .... नृपतेरमार्गीत्।। 12।।

13. **परितः** – (परि + तसिल्) 'पर्यभिभ्याञ्च'[13] सूत्र से 'तसिल्' प्रत्यय।

14. **अभितः** – (अभि + तसिल्) 'पर्यभिभ्याञ्च' सूत्र से 'तसिल्' प्रत्यय।

निष्ठां गते .... सुपुत्रान्।। 13।।

15. **उदारवंश्या** – उदारश्चाऽसौ वंश:। (उदारवंश + यत्) 'तत्र साधु'[14] सूत्र से यत् प्रत्यय। 'यस्येति च' सूत्र से 'अ' लोप। प्रथमा बहुवचन।

16. **दत्रिमसभ्यतोषे** – सभ्या: – 'सभायाम् साधव:'। (सभा + य) 'सभाया: य:'[15] सूत्र से 'य' प्रत्यय। 'यस्येति च' से आ का लोप:। प्रथमा बहुवचन।

कौसल्ययाऽसावि .... लक्ष्मणेन।। 14।।

17. **कौसल्यया** – कौसलस्य राज्ञोऽपत्यं स्त्री। 'वृद्धेत्कोसलाजादाञ्ज्यङ्'[16] सूत्र से ज्यङ् प्रत्यय। (कौसल + ज्यङ्)। 'तद्धितेष्वचामादे:' से आदि वृद्धि। 'यस्येति च' से अ लोप। 'यङश्चाप:' सूत्र से स्त्रीलिंग में चाप् प्रत्यय। तृतीया एकवचन।

18. **ततः** – 'तस्मादिति तत:' (तद् + तसिल्) 'पञ्चम्यातसिल्'[17] सूत्र से तसिल् प्रत्यय।

19. **केकयीतः** – केकयान् आचष्टे :। (केकयी + तसि) 'अपादाने च अहीयरूहो:'[18] सूत्र से तसि: प्रत्यय।

आर्चीद् .... वरिष्ठः।।15।।

20. **यमिनाम्** – यमा: सन्ति ते यमिन: तेषाम्। (यम + इनि) 'अत इनिठनौ'[19] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। षष्ठी बहुवचन।

21. **वरिष्ठः** – अतिशयेन उरू:। 'अतिशायने तमबिष्ठनौ'[20] सूत्र से इष्ठन् प्रत्यय। (उरु + इष्ठन्)। 'प्रिय स्थिरस्फिरोरुबहुगुरुवृद्धतृप्तदीर्घवृन्दारकाणाम् प्रस्थस्फव–र्बहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दा:' सूत्र से उरु को वर् आदेश। (वर् + इष्ठन् = वरिष्ठ:)

वेदः .... गुणिनोऽध्यवात्सुः।।16।।

22. **अङ्गवान्**– प्रशस्तानि अंगानि सन्ति यस्मिन् सः। (अङ्ग + मतुप) 'तदस्यास्त्यस्मिन्नितिमतुप्'[21] सूत्र से मतुप् प्रत्यय।

ततोऽभ्यगाद् .... मधुपर्कपाणिः।।17।।

23. **ततः** – तस्मादिति ततः। (तद् + तसिल्) 'पञ्चम्यातसिल्'[22] सूत्र से तसिल् प्रत्यय।

स .... वचस्तापसकुञ्जरेण।। 20।।

24. **अहंयुना** – अहमस्यास्तीति अहंयुः तेन इति। (अहम् + युस्) 'अहंशुभमोर्युस्'[23] सूत्र से 'युस्' प्रत्यय। तृतीया एकवचन।

25. **शुभंयुः** – शुभमस्याऽस्तीति। (शुभम् + युस्) 'अहंशुभमोर्युस्' सूत्र से युस् प्रत्यय। प्रथमा एकवचन।

मया .... स्वसूनुम् ।।21।।

26. **क्षात्रम्** – क्षत्रस्येदम् इति। 'तस्येदम्'[24] सूत्र से अण् प्रत्यय। (क्षत्र + अण्) 'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि।

27. **द्विजत्वम्** – द्विजस्य भावः इति। (द्विज + त्व) 'तस्य भावस्त्वतलौ'[25] सूत्र से 'त्व' प्रत्यय। नपुसकलिङ्ग प्रथमा एकवचन।

घानिष्यते .... भारमग्रयम् ।।22।।

28. **पुरस्तात्** – 'पूर्वास्मिन्निति'। (पुर + अस्ताति) 'दिक्छब्देभ्यः सप्तमी पञ्चमी-प्रथमाभ्यो-दिग्देशकालेष्वस्तातिः'[26] सूत्र से अस्ताति प्रत्यय। (पुर + अस्ताति) 'यस्येति च' सूत्र से अकार लोप।

29. **अग्रयम्** – अग्रे भवम् इति। अग्र शब्द से 'अग्राद्यत्'[27] सूत्र से यत् प्रत्यय 'यस्येति च' सूत्र से अकारलोप। (अग्र + य)

क्रुध्यन्कुलं .... सुतस्य ।।23।।

30. **इत्थम्** – अनेन प्रकारेण इति। इदम् शब्द से 'इदमस्थमुः'[28] सूत्र से थमु प्रत्यय। ('इदम् + थमुं') 'एतेतौ रथोः' सूत्र से इदम् को इत् सर्वादेश। (इत् + थम् = इत्थम्) 'तद्धितश्चाऽसर्वविभक्तिः' सूत्र से अव्यय संज्ञा तथा 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से विभक्तिलोप।

आशीर्भिरभ्यर्च्य .... कुमारः।।24।।

31. **पृष्ठतः** – पश्चात् इति। पृष्ठ शब्द से स्वार्थ में 'आद्यादिभ्यस्तमेरूपसंख्यानम्'[29] वार्तिक से 'तसि' प्रत्यय। (पृष्ठ + तसि (तस्)) 'तद्धितश्चासर्वविभक्ति' सूत्र से संज्ञा तथा 'अव्ययादाप्सुपः' से लोप।

प्रत्यास्यतः .... लक्ष्मणोऽभूत् ।।25।।

32. **त्रैमातुरः** – तिसृणां मातृणामपत्यम् पुमान्। 'मातुरूत्संख्यासमभद्रपूर्वायाः' सूत्र से अण् प्रत्यय। (त्रिमातुर् + अण्) 'तद्धितेष्वचामादे' सूत्र से आदिवृद्धिः। पुल्लिंग एकवचन।

इषुमति .... रूदन्माङ्गलिक्यः।।26।।

33. **इषुमति** – 'प्रशस्ता इषवः सन्ति यस्मिन् सः।' (इषु + मतुप्) 'तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति मतुप्'[30] सूत्र से 'इषु' शब्द से मतुप् (मत्) प्रत्यय।

34. **कथम्** – किम् प्रकारेण इति (किम् + थमु)। 'किम्' सर्वनाम शब्द से 'किमश्च'[31] सूत्र से थमु (थम्) प्रत्यय। 'किमः कः' सूत्र से किम् को 'क' सर्वादेश।

35. **माङ्गलिक्यः** – मङ्गलं प्रयोजनम् यासां ताः। (मङ्गल + ठञ्) 'प्रयोजनम्'[32] सूत्र से ठञ् (ठ) प्रत्यय। आदि वृद्धि तथा 'ठस्येक' सूत्र से इक प्रत्यय।

अथ .... पक्षिणाश्चाऽनुकूलाः।।27।।

36. **पक्षिणः** – पक्षौ स्तः येषां ते। पक्षि शब्द से 'अत इनिठनौ'[33] सूत्र से इनि (इन्) प्रत्यय। (पक्षि + इन्) 'यस्येति च' सूत्र से इकार लोप।

द्वितीय सर्ग

वनस्पतिनां .... शरदं ददर्श।।1।।

36. **तेजस्विनाम्** – प्रशस्तं तेजोऽस्ति येषाम्। 'अस्मायामेधास्रजो विनि'[34] सूत्र से तेजस् शब्द से विनि प्रत्यय। (तेजस् + विनि (विन्))

बिम्बागतैस्तीरवनैः .... स्थलपद्महासैः।।3।।

38. **सामर्षतया** – अमर्षेण सह वर्तन्ते इति सामर्षः। सामर्षतानाम् भावः इति, 'तस्य भावस्त्वतलौ'[35] सूत्र से तल् प्रत्यय स्त्रीत्व विवक्षा में (सामर्ष + तल् + टाप्) सामर्षता।

निशातुषारैर्नयनाऽम्बुकल्पैः .... तीरतरूर्दिनादौ।।4।।

39. **नयनाम्बुकल्पैः** – ईषद समाप्तानि नयनाऽम्बूनि। 'ईषद्समाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः'[36] सूत्र से 'कल्पप्' प्रत्यय। (नयनाम्बु + कल्पप्)

40. **कुमुद्वतीम्** – कुमुदानि सन्ति यस्यां सा। 'कुमुद–नडवेतसेभ्यो ड्मतुम्'[37] सूत्र से कुमुद् शब्द से 'ड्मतुप्' प्रत्यय। 'झयः' सूत्र से म् को व् आदेश (कुमुद् + डमतुप् (वत्)) स्त्रीलिंग में 'उगितश्च' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय कुमुद्वती।

वनानि .... आलोकयञ्चक्रुरिवादरेण।।5।।

41. **नेत्रकल्पैः** – ईषदसमाप्तानि नेत्राणि तै। 'ईषद्समाप्तौ कल्पब्देश्यदेश्यीयरः' सूत्र से नेत्र शब्द से 'कल्पप् प्रत्यय'। (नेत्र + कल्पप् (कल्प))

42. **विस्मयवन्ति**– विस्मयोऽस्ति येषां तानि। विस्मय शब्द से 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्'[38] सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (विस्मय + मतुप् (मत्)।

प्रभातवाताहतिकम्पिताकृतिः .... अन्यसङ्गमम् ।।6।।

43. **पद्मिनी** – पद्मानि सन्ति यस्यां सा। 'अत इनिठनौ' सूत्र से पद्म शब्द से इनि प्रत्यय। (पद्म + इनि्)।

44. **कुमुद्वती**– पूर्ववत्

अदृक्षताऽम्भांसि .... व्यतिषङ्गवांश्च।।10।।

45. **अरविन्दव्यतिषङ्गवान्**– अरविन्दव्यतिषंगस्य अस्ति इति। 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्'[39] सूत्र से मतुप् प्रत्यय।

लताऽनुपातं कुसुमान्यगृह्णात् .... आस्त।।11।।

46. **काकुत्स्थः** – ककुत्स्थस्य अपत्यम् इति। 'तस्याऽपत्यम्'[40] सूत्र में अण् प्रत्यय। (ककुत्स्थ + अण्) 'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदिवृद्धि।

सितारविन्दप्रचयेषु .... मुखैर्निनादैः ।।18।।

47. **सैकतेषु** – सिकताः सन्ति येषां तानि सैकतानितेषु। 'देशे लुबिलचौ च'[41] सूत्र से अण् प्रत्यय। (सिकता + अण् (अ)) आदिवृद्धि तथा आकार लोप।

विद्यामथैनं विजयां .... यातुधानान् ।।21।।

48. **यथावत्** – यथा अर्हति इति। यथा शब्द से 'तदर्हम्'[42] सूत्र से वति (वत्) प्रत्यय (यथा + वति)

अथाऽऽलुलोके .... चारूपतत्रिशिञ्जम् ।।24।।

49. **पतत्रिणः** – पतत्राणि सन्ति येषां ते। 'अतः इनिठनौ'[43] सूत्र से इनि (इन्) प्रत्यय (पतत्र + इनि)।

क्षुद्रान्न जक्षुर्हरिणा .... लता विलोलाः।।25।।

50. **तत्र** – 'तस्मिन् इति'। तद् सर्वनाम शब्द से 'सप्तम्यास्त्रल्'[44] सूत्र से त्रल् (त्र) प्रत्यय। (तद् + त्रल् (त्र)) 'त्यदादीनामः' सूत्र से तद् के दकार को अकार 'अतोगुणे' सूत्र से पर रूप। 'तद्धितश्चादसर्वविभक्ति' सूत्र से अव्यय संज्ञा। 'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से विभक्ति लोपः।

अपूपुजन्विष्टर .... क्षितिपालपुत्रौ ।।26।।

51. **आतिथ्यम्**–'अतिथि' शब्द से चतुर्थि समर्थ अर्थ में 'अतिथेर्ज्यः'[45] सूत्र से 'ञ्य' प्रत्यय (य)। (अतिथि + ञ्य)

52. **माल्यैः** – 'माला एव माल्यानि'। 'चतुवर्णादीनां स्वाऽर्थ' उपसंख्यानम्'[46] वार्तिक से स्वार्थ में ष्यञ् प्रत्यय। (माला + ष्यञ् (य))

दैत्याऽभिभूतस्य .... अभाषिषाताम् ।।27।।

53. **दैत्याः**–दितेः अपत्यानि पुमांसौ दैत्याः। 'दित्यदित्यादित्यपत्युतरदाण्ण्यः'[47] सूत्र से दिति शब्द से 'ण्य' (य) प्रत्यय। (दिति + ण्य)

54. **इत्थम्** – पूर्ववत्।

तान् प्रत्यवादीदथ .... नोऽरिसमिन्धनेषु ।।28।।

55. **राघवः** – रघोः अपत्यम् पुमान्। 'तस्याऽपत्यम्'[48] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (रघु + अण् (अ)) 'ओर्गुणः' सूत्र से उ को गुण ओ तथा अयादि।

56. **धर्म्यम्** – धर्मादनपेतम् (धर्म + यत्(य))।'धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते'[49] सूत्र से यत् प्रत्यय।

प्रतुष्टुवुः कर्म .... प्रसर्पत् ।।29।।

57. **ततः** – पूर्ववत्।

58. **यज्ञियैः** – यज्ञमर्हन्ति इति (यज्ञ + घ)। 'यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ'[50] सूत्र से 'घ' प्रत्यय। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'घ' को 'इय' आदेश।

59. **आर्त्विजीनैः** – ऋत्विस्कर्म अर्हन्ति इति। ऋत्विज् शब्द से 'यज्ञर्त्विग्भ्याम् घखञौ'[51] सूत्र से 'खञ्' (ख) प्रत्यय। (ऋत्विज् + खञ्)।'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[52] सूत्र से ख को ईन् आदेश।

आपिङ्गरूक्षोर्ध्व .... चाऽऽनशेऽब्दैः।।30।।

60. **शिरस्याः** – शिरसि भवाः इति (शिरस् + यत्)।'शरोराऽवयवाद्यत्'[53] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय।

61. **शिरालाः** – शिराः सन्ति यासां ताः। शिरा शब्द से 'प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम्'[54] सूत्र से लच् (ल) प्रत्यय। (शिरा + लच् (ल))

62. **गिरिकूटदघ्नैः** – गिरिकुटाः प्रमाणम् एषाम् ते।'प्रमाणे द्वयसज्दध्नञ्मात्रचः'[55] सूत्र से गिरिकूट शब्द से 'दध्नच्' प्रत्यय। (गिरिकूट + दध्नच्)

63. **प्रावृषेण्यैः** – प्रावृषि भवाः। प्रावृषि शब्द से 'प्रावृषः एण्यः'[56] सूत्र से 'एण्य' प्रत्यय। (प्रावृषि + एण्य)

64. **पिंगलाक्षैः** – पिंगले अक्षिणि येषां ते इति पिगलाक्षि।'बहुब्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच्'[57] सूत्र स 'षच्' प्रत्यय। (पिगलाक्षि + षच् (अ)) 'यस्येति च' सूत्र से इकारलोप।

गाधेयदिष्टं .... महार्थम् ।।32।।

65. **अस्त्रचुञ्चुः**– 'अस्त्रैर्वितः' इति।'तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ'[58] सूत्र से अस्त्र शब्द से 'चुञ्चुप्' प्रत्यय। (अस्त्र + चुञ्चुप् (चुञ्चु))

66. **गाधेयः** – गाधेः अपत्यम् पुमान्। गाधि शब्द से 'इतश्चानिञः'[59] सूत्र से 'ढक्' (ढ) प्रत्यय। (गाधि + ढक्) 'आयनेयीनीयियः ऊढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ढ को एय आदेश।

67. **मायाचणम्** – मायया वित्तः इति। माया शब्द से 'तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ'[60] सूत्र से चणप् (चण्) प्रत्यय। (माया + चणप्)

आत्मम्भरिस्त्वं .... न कस्मात् ।।33।।

68. **शौवस्तिकत्वम्** – श्वः भवः इति। 'श्वसष्तुट् च'[61] सूत्र से श्व शब्द से ठञ् प्रत्यय एवं तुट् आगम। शौवस्तिक – शौवस्तिकस्य भावः इति। 'तस्य भावस्त्वतलौ'[62] सूत्र से 'त्व' प्रत्यय।

अह्नो द्विजान् .... वेदवृत्ते।।35।।

69. **दाशरथे** – दशरथस्य अपत्यम् पुमान्। दशरथ शब्द से 'अत इञ्'[63] सूत्र से इञ् (इ) प्रत्यय। (दशरथ + इञ्) आद्धिवृद्धि, अकारलोप।

धर्मोऽस्ति .... धृतकार्मुकेषुः।।35।।

70. **राक्षस**–रक्षः एव राक्षसः इति। 'प्रज्ञादिभ्यश्च'[64] सूत्र से अण् प्रत्यय। (रक्षस् + अण्) आद्धिवृद्धि।

71. **राजन्यवृत्तिः** – राज्ञः अपत्यम् पुमान् तस्यवृत्तिः। 'राजश्वशुराद्यत्'[65] सूत्र से राजन् शब्द से यत् प्रत्यय। (राजन् + यत) **राजन्य** तस्य वृत्तिः।

इत्थंप्रवादं .... प्रधानान्निरास्थत् ।।36।।

72. **इत्थम्** – पूर्ववत्।

जग्मुः प्रसादं .... मुनिना कुमारः।।37।।

73. **मानसानि** – मनांसि एवं मानसानि इति। 'प्रज्ञादिभ्यश्च'[66] सूत्र से मनस् शब्द से अण् प्रत्यय। (मनस् + अण् (अ)) आदिवृद्धि।

महीय्यमाना .... न भूमिः ।।38।।

74. **वीरवती**–प्रशस्तः वीरः अस्ति यस्यां सा। वीर शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[67] सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (वीर + मतुप्) स्त्रीलिंग –वीरवती।

बलिर्बबन्धे .... गुरूर्न तस्य।।39।।

75. **दैत्य** – पूर्ववत्।

76. **तथा** – तेन प्रकारेण इति। तद् शब्द से 'प्रकारवचने थाल्'[68] सूत्र से थाल् प्रत्यय। (तद् + थाल् (था)) 'त्यदादीनामः' सूत्र से तद् के द् को 'अ'। 'अतोगुणे' से पूर्वरूप।

इति ब्रुवाणो मधुरं .... निजिघृक्षयिष्यन् ।।40।।

77. **मैथिलः** – मिथिलायाः राजा इति। 'मिथिला' शब्द से 'जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्'[69] सूत्र से 'अञ्' प्रत्यय। (मिथिला + अञ् (अ)) आदि वृद्धि, आकारालोप।

इतः स्म .... नृसिंहौ।।41।।

78. **अश्विनौ** – अश्विन्यां जातौ इति। 'सन्धिवेलाघृतुनक्षत्रेभ्योऽण्'[70] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (अश्विन + अण् (अ)) 'नक्षत्रेभ्योबहुलम्' सूत्र से आदिवृद्धि लोप।

अजिग्रहत्तं .... रघुनन्दनस्तत् ।।42।।

79. **पिनाकी** – 'पिनाकः अस्य अस्ति'। पिनाक शब्द से 'अत इनिठनौ'[71] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। (पिनाक + इनि (इन्))

ततो नदीष्णान् .... मैथिलमर्त्यमुख्यः।।43।।

80. **पथिकान्** – पथेषु कुशलाः इति। पथि शब्द से 'तत्र कुशलः पथः'[72] सूत्र से 'वुन्' प्रत्यय। (पथि + वुन् (वु)) 'युवोरनाकौ' सूत्र से वु को अक।

क्षिप्रं ततोऽध्वन्य .... मिथिलामगच्छत् ।।44।।

81. **अध्वन्याः** – अध्वानम् अलम् गच्छन्ति इति। 'अध्वनो यत्खौ'[73] सूत्र से अध्वन् शब्द से 'यत्' प्रत्यय। (अध्वन् + यत् (य)) 'ये चाऽभावकर्मणोः' सूत्र से प्रकृति भाव 'टि' का लोप नहीं।

82. **वृद्धतमः** – अतिशयेन वृद्धः इति। वृद्ध शब्द से 'अतिशायने तमबिष्ठनौ'[74] सूत्र से 'तमप्' प्रत्यय। (वृद्ध + तमप् (तम))

83. **यविष्ठवत्** – 'अतिशयेन युवा' इति। युवन् शब्द से 'अतिशायने तमबिष्ठनौ'[75] सूत्र से 'इष्टन्' प्रत्यय। (युवन् + इष्ठन्) 'स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणाम् यणादिपरं पूर्वस्य च गुण' सूत्र से वन् का लोप। उ को गुण (यो + इष्ठः)। अयादि – यविष्ठ। यविष्ठेन तुल्यम्, इति।, 'तेन तुल्यं क्रिया चेद्वति' सूत्र से 'वति' प्रत्यय। (यविष्ठ + वति (वत्)) अव्ययपद।

वृन्दिष्ठं .... वरिष्ठम् ।।45।।

84. **बंहिष्ठकीर्तिः** – अतिशयेन बहुला इति। 'अतिशायने तमबिष्ठनौ' सूत्र से 'इष्ठन्' प्रत्यय। (बहुल + इष्ठन् (इष्ठ)) 'प्रिय-स्थिर-स्फिरोरु बहुल गुरू वृद्ध तृप्त दीर्घ्रं वृन्दारकानां' प्र-स्थ-स्फ-वरबंहि गर् वर्षि त्रब् द्राधि-वृन्दाः'[76] सूत्र से बहुल को बंहि आदेश।

85. **प्रेष्ठम्**–अतिशयेन प्रियः इति। 'अतिशायने तमबिष्ठनौ' सूत्र से 'इष्ठन्' प्रत्यय। (प्रिय + इष्ठन्)। 'प्रिय स्थिर-स्फिरोरूबहुल गुरू वृद्ध तृप्त दीर्घ्रं वृन्दारकानां प्र-स्थ-स्फ-वरबंहि गर् वर्षि त्रब द्राधि वृन्दाः' सूत्र से प्रिय का प्र आदेश। (प्र + इष्ठ = प्रेष्ठ)

86. **वृन्दिष्ठः** – अतिशयेन वृन्दारकः इति। वृन्दारक शब्द से 'अतिशायने तमबिष्ठनौ'[77] सूत्र से इष्ठन् (वृन्दारक + इष्ठन्) 'प्रिय स्थिर-स्फिरोरूबहुल गुरू वृद्ध तृप्त दीर्घ्रं वृन्दारकानां प्र-स्थ-स्फ-वरबंहि गर् वर्षि त्रब द्राधि वृन्दाः' सूत्र से वृन्दारक को वृन्द आदेश वृन्द + इष्ठ = अकारलोप = वृन्दिष्ठः।

87. **गरिष्ठम्** – अतिशयेन गुरवः इति। गुरू शब्द से 'अतिशायने तमबिष्ठनौ'[78] सूत्र से इष्ठन् (गुरू + इष्ठन् (इष्ठ))। 'प्रिय स्थिर–स्फिरोरूबहुल गुरू वृद्ध तृप्त दीर्घ्रं वृन्दारकानां प्र–स्थ–स्फ–वरबंहि गर् वर्षि त्रब द्राधि वृन्दाः' सूत्र से गुरु को गर् = गर् + इष्ठ = गरिष्ठः

88. **वरिष्ठम्** – अतिशयेन उरुः इति। (उरु + इष्ठन्) उरु शब्द से 'अतिशायने तमबिष्ठनौ'[79] सूत्र से इष्ठन् प्रत्यय। 'प्रिय स्थिर–स्फिरोरूबहुल गुरू वृद्ध तृप्त दीर्घ्रं वृन्दारकानां प्र–स्थ–स्फ–वरबंहि गर् वर्षि त्रब द्राधि वृन्दाः' सूत्र से उरु को वर् आदेश – (वर् + इष्ठ)। वरिष्ठ –नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

89. **गुरुवत्** – गुरुणाम् तुल्यम् इति। गुरु शब्द से 'तेन तुल्यं क्रियाचेद्वति'[80] सूत्र से 'वति' प्रत्यय। (गुरु + वति (वत्)) अव्ययपद।

त्रिवर्गपारीणमसौ .... बभासे ।।46।।

90. **पारीणम्** – पारम् गामी इति। पार शब्द से 'अवारपाराऽत्यन्ताऽनुकामं गामी'[81] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (पार + ख) 'आयनेयीनीयि यः ऊढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन्' आदेश। (पार + ईन् – पारीन)

91. **विवेकदृश्वत्वम्** – विवेकदृश्वम्ः तस्य भावः इति। 'तस्यभावस्त्वतलौ'[82] सूत्र से त्व प्रत्यय। (विवेकदृश्व + त्व)

हिरणमयी शाललतेव .... मैथिली।।47।।

92. **हिरणमयी** – 'हिरण्यस्य विकारः' इति। 'दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिक जैह्माशिनेयवाशिनायनिभ्रौणहत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेय हिरण्मयानि'[83] सूत्र से 'मयट्' (मय) प्रत्यय। यकारलोप निपातन। (हिरण्य + मयट्) स्त्रीलिंग में हिरण्मयी।

93. **देवता**–देवस्य भावः इति। देव एव देवता। 'देवात्तल्'[84] सूत्र से 'तल्' प्रत्यय। (देव + तल्) स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय (देवत + टाप् = देवता)।

94. **मैथिली** – मैथिलस्य अपत्यं स्त्री इति। 'अत इञ्'[85] सूत्र से 'इञ्' पत्यय। (मिथिला + इञ्) 'इतो मनुष्यजातेः' सूत्र से ङीप् (ई) प्रत्यय। (मैथिलि + ङीप् = मैथिली)

लब्धां ततो .... रघुवर्ग्यलक्ष्मीम्।।48।।

95. **विश्वजनीनवृतिः** – विश्वेभ्यः जनेभ्यो हिता इति। 'आत्मन्विश्वजनभोगोत्तर पदात्खः'[86] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (विश्वजन + ख)– 'आयनेयीनीयियः ऊढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ख को ईन आदेश। (विश्वजन + ईन = विश्वजनीन्)

96. **आत्मनीनाम्** – आत्मने हिता इति। (आत्मन् + ख)। 'आत्मन्विश्वजनभोगोत्तर पदात्ख:' सूत्र से 'ख' प्रत्यय। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ख के स्थान पर ईन् आदेश। (आत्मन् + ईन् = आत्मनीन) ताम्।

97. **रघुवर्ग्यम्** – रघुवंशोत्पन्नानाम् राज्ञां वर्ग:, तत्र भवाः इति। 'अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्'[87] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (रघुवर्ग + यत्) 'यस्येति च' सूत्र से अकार लोप।

सुप्रातम् .... बलमध्वनीनम् ।।49।।

98. **अश्वीयम्** – अश्वानाम् समूहः इति। अश्व शब्द से 'केशाऽश्वाभ्यां यच्छावन्यतरस्याम्'[88] सूत्र से 'छ' प्रत्यय। 'आयनेयीनीयियः ऊढखछधां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से छ को ईय आदेश (अश्व + छ – ईय)

99. **राजन्यकम्** – राजन्यानां समूहः इति। राजन्य शब्द से 'गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजन्य राजपुत्रवत्समनुष्याजाद् वुञ्'[89] सूत्र से 'वुञ्' प्रत्यय। (राजन्य + वुञ् (वु)) 'युवोरनाकौ' सूत्र से वु को अक आदेश।

100. **हास्तिकम्** – हस्तिनां समूहः इति। हस्ति शब्द से 'अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्'[90] सूत्र से ठक् प्रत्यय। (हस्ति + ठक् (ठ)) 'किति च' सूत्र से आदिवृद्धि। 'ठस्येक:' सूत्र से ठ को इक् आदेश।

101. **अध्वनीनम्** – अध्वानमलं गच्छतीति। (अध्वन् + ख) अध्वन् शब्द से 'अध्वनो यत् खौ'[91] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां' प्रत्ययादीनाम् सूत्र से ख के स्थान पर ईन आदेश। (अध्वन् + ख ‹ ईन)'

विशङ्कुटो .... जामदग्न्यः।।50।।

102. **सम्पन्नतालद्वयसः**–सम्पन्नतालः प्रमाणमस्य इति। प्रमाणे 'द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच:'[92] सूत्र से 'द्वयसच्' प्रत्यय। (सम्पन्नताल + द्वयसच्)

103. **धनुष्मान्**–धनुः अस्ति यस्य सः। धनुष् शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[93] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (धनु + मतुप् (मत्))

104. **जामदग्न्यः** – जमदग्नेः अपत्यं पुमान् इति। जमदग्नि शब्द से 'गर्गादिभ्यो यञ्'[94] सूत्र से 'यञ्' प्रत्यय (जमदाग्नि + यञ्) आदिवृद्धि, इकारलोप।

105. **पुरस्तात्** – पूर्ववत्।

उच्चैरसौ .... अनुनिनीषुरूचे।।51।।

106. **राघवम्** – पूर्ववत्।

अनेकशो .... राम!रामे।।52।।

107. **अनेकशः** – एकैकवारम् इति। 'संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम्'[95] सूत्र से 'शस्' प्रत्यय। (अनेक + शस्)

108. **निर्जितराजकः**– 'राज्ञं समूहः' इति। राजन् शब्द से 'गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजन्यराजपुत्रवत्स मनुष्याजाद् वुञ्'[96] सूत्र से 'वुञ्' प्रत्यय। (राजन् + वुञ्) 'टेः' सूत्र से टि (अन्) लोप। 'युवोरनाकौ' सूत्र से 'वु' को अक आदेश।

अजीगणत्.. तस्य।।53।।

109. **यदा** – यत् काले इति। यद् शब्द से 'सर्वेकान्यकिंयत्तदः काले दा'[97] सूत्र से दा प्रत्यय। (यद् + दा) 'त्वयदादीनामः' सूत्र से दकार को अकार तथा पूर्वरूप।

110. **तदा**–तत् काले इति। तद् शब्द से 'सर्वेकान्यकिंयत्तदः काले दा' सत्र' से 'दा' प्रत्यय। (तद् + दा) 'त्वयदादीनामः' से दकार को अकार तथा पूर्वरूप।

111. **दाशरथम्** – दशरथस्येदम् इति। दशरथ शब्द से 'तस्येदम्'[98] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (दशरथ + अण्) वृद्धि, अकारलोप।

तृतीय सर्ग

ततः सुचेतीकृत .... समनीचकार।।2।।

112. **पौराः** – पुरि भवाः इति। पुर शब्द से 'तत्र भवः'[99] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (पुर + अण् (अ)) आदिवृद्धि, अकारलोप।

आदिक्षत् .... महार्धरत्नम् ।।3।।

113. **आदीप्तकृशानुकल्पप्** – आ समन्तात् दीप्तश्चासौ कृशानुः इति। 'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः'[100] सूत्र से 'कल्पप्' प्रत्यय। (आदीप्तकृशानु + कल्पप्)

मातामहा .... वनप्रयाणम्।।6।।

114. **मातामहः** – मातुः पिता इति। मातृ शब्द से 'पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः'[101] सूत्र से 'डामहच्' प्रत्यय। (मातृ + डामहच् (आमह)) 'टेः' सूत्र से 'टि' (ऋ) लोप।

कर्णेजपैः .... सनरेन्द्रमृत्युम् ।।7।।

115. **स्त्रैणेन** – स्त्रीषु भवः इति। 'स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्'[102] सूत्र से नञ् प्रत्यय। (स्त्री + नञ् (न)) आदि वृद्धि। तृतीया एकवचन।

116. **लघिम्ना** – लघोः भावः इति। लघु शब्द से 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा'[103] सूत्र से इमनिच् प्रत्यय। (लघु + इमनिच् (इमन्)) 'टेः' सूत्र से टि लोप। तृतीया एकवचन।

ततः प्रविव्राजयिषु .... शोचन् ।।9।।

117. **सौमित्रिः** – सुमित्रायाः अपत्यम् पुमान् इति। 'बाह्वादिभ्यश्च'[104] सूत्र से इञ् पत्यय। (सुमित्रा + इञ् (इ)) आदिवृद्धि, आकारलोप। पुल्लिंग एकवचन।

118. **ततः** – पूर्ववत्।

गतो वनं .... मनांसि।।।11।।

119. **जनता** – जनानाम् समूहः इति। 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्'[105] सूत्र से 'जन' शब्द से 'तल्' प्रत्यय। (जन + तल् (त)) स्त्रीत्व विवक्षा में टाप्।

असृष्ट यो यश्च .... वनस्य मोक्षः।।13।।

120. **सर्वदाः** – सर्वस्मिन काले इति। सर्व शब्द से 'सर्वैकान्यकिंयतदः काले'[106] सूत्र से 'दा' प्रत्यय। (सर्व + दा = सर्वदा) अव्यय पद।

विद्युत्प्रणाशं .... गुरूणाम् ।।14।।

121. **तृणवत्** – तृणम् तुल्यम् इति। तृण शब्द से 'तेन तुल्यं' क्रिया चेद्वति'[107] सूत्र से वति प्रत्यय। (तृण + वति (वत्)) अव्ययपद।

पौरा निवर्तध्वमिति .... स्म सूतम् ।।15।।

122. **पौराः**–पूर्ववत्।

123. **मत्तः**–मदिति मत्तः इति। 'अस्मत्' शब्द से पञ्चमी अर्थ में 'पञ्चम्यास्तसिल्'[108] सूत्र से 'तसिल्' प्रत्यय। (अस्मद् + तसिल् (तस्)) 'त्वमोवेकवचने' सूत्र से अस्मद् को मत् आदेश। (मत् + तस् = मत्तः)।

सूतोऽपि गङ्गासलिलै .... पुरमाविवेश ।।18।।

124. **राघवयोः** – रघोरपत्ये पुंमासौ–पूर्ववत्।

प्रतीय सा .... सर्वचेष्टा ।।19।।

125. **राजन्यः** – राज्ञामपत्यानि पुमांसः इति। राजन् शब्द से 'अपत्य' अर्थ में 'राजश्वसुराद्यत्'[109] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (राजन् + यत् (य)) 'नस्तद्धिते' से टि का लोप किन्तु 'ये चाऽभावकर्मणोः' सूत्र से प्रकृति भावः होने से राजन्यः पुल्लिंग एकवचन।

आसिष्ट नैकत्र .... द्युनिवासभूयम् ।।21।।

126. **एकत्र**–एकस्मिन् इति। एक शब्द से 'सप्तम्यास्त्रल्'[110] सूत्र से 'त्रल्' प्रत्यय। (एक + त्रल् (त्रल)) अव्यय पद।

ताः सान्त्वयन्ती .... यूनः।।23।।

127. **बन्धुता**–बन्धूनां समूहः इति। 'बन्धु' शब्द से 'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल'[111] सूत्र से तल् प्रत्यय। (बन्धु + तल् (त)) 'तलन्तं स्त्रियाम्' सूत्र से स्त्रीलिंग में 'टाप्' प्रत्यय। (बन्धुत + टाप् = बन्धुता)

सुप्तो नभस्तः .... राज्ञः।।24।।

128. **नभस्तः** – नभस् इति पञ्चम्यन्त अर्थ में 'नभस्' शब्द से 'अपादाने चाऽहीयरुहोः'[112] सूत्र से तसिल् प्रत्यय। (नभस् + तसिल् (तस्)) नभस्तः – अव्यय पद।

अशिश्रवन् .... गुरुणाम् ।।25।।

129. **यदा** – यस्मिन् काले इति। पूर्ववत्।

130. **आत्ययिकम्** – अत्ययः प्रयोजनं यस्य सः। 'अत्यय' शब्द से 'प्रयोजनम्'[113] सूत्र से 'ठञ्' प्रत्यय। (अत्यय + ठञ् (ठ)) आदिवृद्धि, 'ठस्येकः' से 'ठ' को इक आदेश अकार लोप। आत्ययिकम् नपुसंकलिंग रूप।

बन्धूनशङ्किष्ट .... अरासिषुश्च।।26।।

131. **समाकुलत्वात्** – समाकुलस्य भावः इति। 'समाकुल' शब्द से 'तस्य भावस्त्वतलौ'[114] सूत्र से 'त्व' प्रत्यय। (समाकुल + त्व) पञ्चमी एकवचन।

चक्रन्दुः .... प्रतिपूर्णमन्याः।।28।।

132. **अमात्यः** – अमा सह वर्तते इति। 'अव्ययात्त्यप्' सूत्र से एवं 'अमेहक्वतसित्रेभ्यएव'[115] वर्तिक से 'अमा' शब्द से 'त्यप्' प्रत्यय। (अमा + त्यप् – (त्य)) – अमात्यः – पुल्लिंग एकवचन।

दिदृक्षमाणः .... वृत्तमस्मै।।29।।

133. **परितः**– पूर्ववत्।

134. **यथावत्**–पूर्ववत्।

नृपात्मजौ .... बह्वनर्थम्।।31।।

135. **लघुत्वम्** – लघोः भावः इति। लघु शब्द से 'तस्यभावस्त्वतलौ'[116] सूत्र से 'त्व' प्रत्यय। (लघु + त्व) नपुसकलिङ्ग एकवचन।

नैतन्मतं .... रोरूदावान् ।।32।।

136. **रोरूदावान्** – रोरूदा अस्ति यस्य सः इति। रोरूदा शब्द से 'तदस्यास्त्यास्मिन्निति मतुप्'[117] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (रोरूदा + मतुप् (मत्)) 'मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः' सूत्र से मत् के 'म' को 'व'।

137. **मत्कम्** – अहं ग्रामणीः अस्य इति। अस्मद् शब्द से 'स एषां ग्रामणीः'[118] सूत्र से 'कन्' प्रत्यय। (अस्मद् + कन् (क)) 'त्वमावेकवचने' सूत्र से मपर्यन्त भाग को 'म' आदेश। (म + अद् + क) 'अतो गुणे' सूत्र से पररूप एकादेश। नपुसंलिंग एकवचन।

138. **सहस्त्रशः**–सहस्त्रबारम् इति। 'बह्वल्पार्थच्छस्कारकादन्यतरस्याम्'[119] सूत्र से सहस्त्र शब्द से 'शस्' प्रत्यय। (सहस्त्र + शस्) अव्ययपदः।

तं सुस्थयन्तः .... अध्वरपात्रजातम्।।33।।

139. **अन्त्यः** – अन्ते भवा इति। अन्त शब्द से 'दिगादिभ्यो यत्'[120] सूत्र से यत् प्रत्यय। (अन्त + यत् (य))

उद्क्षिपन् .... चन्दनानि।।34।।

140. **कांस्यम्** – कंसीयस्य विकार: इति। कंसीय शब्द (कंस + छ (ईय)) से 'कंसीय परशब्दयोर्यञत्रौ लुक्च' सूत्र से 'छ' प्रत्यय। का लोप तथा यञ् प्रत्यय। (कंस + यञ् (य)) आदि वृद्धि, अकार लोप।

सम्प्राप्य तीरं .... अवृत्तयस्ते।।39।।

141. **यामुनम्** – यमुनाया: इदम् इति। यमुना शब्द से 'तस्येदम्'[121] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (यमुना + अण् (अ)) आदिवृद्धि, आकार लोप। नपुसंकलिंग एकवचन।

ईयु: .... पयोभि:।।40।।

142. **फलवत्** – फलानि सन्ति यस्मिन् तत्। फल शब्द से 'तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति मतुप्'[122] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (फल + मतुप् – (मत्)), अकारान्त होने से मत् को वत्)

आतिथ्यमेभ्य: .... द्राधिमवन्त्यदूहु:।।42।।

143. **आतिथ्यम्** – अतिथये इदम् इति। अतिथि शब्द से 'अतिथेर्ञ्य:'[123] सूत्र से 'ञ्य' प्रत्यय। (अतिथि + ञ्य)।

144. **प्रथिम्न:** – पृथो: भाव: इति। पृथु शब्द से 'पृथ्वादिभ्य: इमनिज्वा'[124] सूत्र से 'इमनिच्' प्रत्यय। (पृथु + इमनिच् (इमन्)) 'र ऋतो हलादेर्लघो:'[125] सूत्र से पृथु के ऋ को र्। (प्रथु + इमन्) 'टे:' सूत्र से टि (उ) लोप। षष्ठी एकवचन।

146. **म्रदिमा** – मृदो: भाव: इति। मृदु शब्द से 'पृथ्वादिभ्य: इमनिज्वा'[126] सूत्र से 'इमनिच्' प्रत्यय। (मृदु + इमनिच् (इमन्)) 'र ऋतो हलादेर्लघो:' सूत्र से ऋ को र् होकर(म्रदु + इमन्) 'टे:' सूत्र से टि (उ) लोप। प्रथमा एकवचन पुल्लिंग।

147. **द्राघिमवन्ति**–दीर्घस्य भाव: इति। दीर्घ शब्द से 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' सूत्र से 'इमनिच्' प्रत्यय। (दीर्घ + इमनिच् (इमन्)) 'प्रिय–स्थिर–स्फिरोरूबहुलगुरूवृद्ध तृप्त दीर्घ्रं वृन्दारकानां प्र–स्थ–स्फ–वरबंहि–गरवर्षित्रबद्राधिवृन्दा:'[127] सूत्र से दीर्घ को द्राघ आदेश। 'द्राघ + इमन्' टि लोप, द्राघिमन् शब्द से 'तदस्याऽस्त्यास्मिन्निितिमतुप्' सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (द्राधिमन् + मतुप्) 'न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य' से न् का लोप। मकार उपधा से परे मत् को वत्। नपुसकलिंग प्रथमा बहुवचन।

आज्ञां .... तस्मिन् ।।43।।

147. **आद्या:** – आदौ भवा: इति। आदि शब्द से 'दिगादिभ्यो: यत्'[128] सूत्र से यत् प्रत्यय। (आदि + यत् (य)) इकार लोप। प्रथमा बहुवचन।

वस्त्राऽन्नपानं .... शेध्वम्।।44।।

148. **प्रीतिमान्** – प्रीतिः अस्ति यस्य सः। प्रीति शब्द से 'तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति मतुप्'[129] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (प्रीति + मतुप् (मत्)) पुल्लिंग प्रथमा एकवचन।

वैखानसेभ्यः .... चित्रकूटम् ।।46।।

149. **रविमार्गभङ्गम्ः** – रविमार्गभंङ्ग अस्य अस्ति इति। 'अर्श आदिभ्योऽच्'[130] सूत्र से 'अच्' प्रत्यय। (रविमार्गभंग + अच् 'अ') अकारलोप।

दृष्ट्वा .... मुज्जिहानः ।।47।।

150. **सौमित्रि**–पूर्ववत्।

151. **शार्ङ्गम्** – शृंङ्गस्य विकारः इति। शृंङ्ग शब्द से 'अनुदात्तादेश्च'[131] सूत्र से अञ् (अ) प्रत्यय। (शृंङ्ग + अञ्) आदि वृद्धि, अकारलोप।

शुक्लोत्तरा .... स्ववर्ग्यान् ।।48।।

152. **दाशरथिः** – पूर्ववत्।

153. **स्ववर्ग्यान्** – स्ववर्गे जाताः इति। स्ववर्ग शब्द से 'अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्'[132] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (स्ववर्ग + यत्)अकारलोप। द्वितीया बहुवचन रूप।

चिरं .... अन्तिकेऽपाम् ।।50।।

154. **राघवः** – पूर्ववत्।

अरण्ययाने .... कनीयान् ।।51।।

155. **कनीयान्**– 'अतिशयेन अल्पः' इति। 'अल्प' शब्द से 'द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ'[133] सूत्र से 'ईयसुन्' प्रत्यय। (अल्प + ईयसुन् (ईयस्)) 'युवाऽल्पयोः कन्यत्तरस्याम्'[134] सूत्र से 'अल्प' को 'कन्' आदेश। (कन + ईयस्) पुल्लिंग प्रथमा एकवचन।

कृती श्रुती .... पुत्रकाम्या।।52।।

156. **श्रुती**–श्रुतम् अनेन इति। 'श्रुत' शब्द से 'इष्टादिभ्यश्च'[135] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। (श्रुत + इनि (इन्)) अकारलोप। पुल्लिंग एकवचन।

157. **कृती** – कृतम् अनेन इति। 'कृत' शब्द से 'इष्टादिभ्यश्च' सूत्र से इनि प्रत्यय। (कृत + इनि (इन्)) अकारलोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

158. **धीमान्** – प्रशस्ता धी : अस्ति यस्य सः। धी शब्द से 'तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति मतुप्'[136] सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (धी + मतुप् (मत्)) पुल्लिङ्ग एकवचन।

160. **पैतृकम्** – पितुः इदम् तत्। 'पितृ' शब्द से 'पितुर्यच्च'[137] सूत्र से ठञ् (ठ) प्रत्यय। (पितृ + ठञ्) 'इसुसुक्तान्तात्कः' सूत्र से ठ को क आदेश। आद्धिवृद्धि। नपुसंकलिङ्ग प्रथमा एकवचन।

वृद्धौरसां .... धर्म्यम् ।।54।।

160. **वृद्धौरसाम्** –(वृद्ध औरसो यस्या सा) औरसाम् – उरसा निर्मितः वा औदर्यः पुत्रः इति। उरस् शब्द से 'उरसोऽण् च'[138] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (उरस् + अण् (अ)) आदिवृद्धि। षष्ठी बहुवचन।

161. **कनीयान्** – पूर्ववत्।

162. **कथम्** – पूर्ववत्।

163. **धर्म्यम्**–धर्मादनपेतम् इति। धर्म शब्द से 'धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते'[139] सूत्र से 'यत्' (य) प्रत्यय। (धर्म + यत्) – अकारलोप। नपुसंकलिङ्ग।

उर्जस्वलं .... शान्तमेतत् ।।55।।

164. **ऊर्जस्वलम्** – ऊर्कम् अस्ति यस्मिन् इति। 'ऊर्क' शब्द से 'ज्योत्स्नातमिस्राणोर्जविन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलिमसाः'[140] सूत्र से निपातन 'वलच्' प्रत्यय। (ऊर्ज + वलच् (वल)) नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

165. **हस्तिनः** –हस्तः अस्ति येषां ते इति। हस्त शब्द से 'अत इनिठनौ'[141] सूत्र से इनि (इन्) प्रत्यय। (हस्ति + इनि) प्रथमा बहुवचन।

इति निगदितवन्तं .... अस्मन्मतेन ।।56।।

166. **राघवः** – पूर्ववत्।

167. **मदीये** – मम इमे इति। 'अस्मद्' शब्द से 'त्यदादीनि च' सूत्र से वृद्धि संज्ञा। 'वृद्धाच्छः'[142] सूत्र से 'छ' प्रत्यय। (अस्मद् + छ) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[143] सूत्र से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश।

चतुर्थ सर्ग

निवृत्ते भरते .... आरण्यमीयिवान्।।1।।

168. **धीमान्**–पूर्ववत्

आंहिषातां .... शरणैषिणाम्।।14।।

169. **ब्राह्मया**–ब्रह्मणः इयं ब्राह्मी इति। ब्रह्मन् शब्द से 'तस्येदम्'[144] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (ब्रह्मन् + अण् (अ)) आदिवृद्धि एवं नान्त टि का लोप। (ब्राह्म् + अ = ब्राह्म) 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्त–यप्ठक्ठञ्ठकञ्क्वरपः' सूत्र से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय। (ब्राह्म + ई (ङीप्)) तृतीया एकवचन।

170. **शरण्यम्** – शरणे साधुः इति। शरण शब्द से 'तत्र साधुः'[145] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (शरण + यत्) अकार लोप। नपुसंकलिङ्ग।

वनेषु .... विचक्रमे।।8।।

171. **वासतेयेषु**-वसतौ साधूनि वासतेयानि तेषु इति। 'पथ्यतिथिवसतिस्वपत्तेर्ढञ्'[146] सूत्र से 'ढञ्' प्रत्यय। (वसति + ढञ् (ढ)) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[147] सूत्र से ढ को 'एय' आदेश। (वसति + एय)। आदिवृद्धि। इकार लोप। सप्तमी बहुवचन।

172. **आतिथेयः** - अतिथिषु साधुः इति। अतिथि शब्द से 'पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ्'[148] सूत्र से 'ढञ्' प्रत्यय। (अतिथि + ढञ् (ढ)) आदिवृद्धि 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ढ को 'एय' आदेश। इकार लोप। प्रथमा एकवचन।

ऋग्यजुषम् .... होमवान्।।9।।

173. **शूल्यम्**-शूले संस्कृतम् इति। शूल शब्द से 'शूलो खाद्यत्'[149] सूत्र से यत् प्रत्यय/ (शूल + यत् (य)) अकार लोप। नपुसकलिङ्ग प्रथमा एकवचन।

174. **उख्यम्**-उखायाम् संस्कृतम् (मांसम्) इति। 'उखा' शब्द से 'शूलो खाद्यत्' सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (उखा + यत् (य)) अकार लोप। नपुसकलिङ्ग एकवचन।

175. **होमवान्**-होमः अस्ति यस्य सः इति। होम शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[150] सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (होम + मतुप् (मत्)) अकार से परे मत् को वत्। प्रथमा एकवचन पुल्लिंग।

176. **सामन्यान्**-सामसु साधवः इति। सामन् शब्द से 'तत्र साधुः'[151] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (सामन् + यत्)। द्वितीया बहुवचन्।

वसानः .... तनुत्रवान्।।10।।

177. **तन्त्रक**-तन्त्रात् अचिराऽपहृतः इति। 'तन्त्र' शब्द से 'तन्त्रादचिरापहृते'[152] सूत्र से 'कन्' (क) प्रत्यय। (तन्त्रक + कन् (क))।

178. **सर्वांङ्गीणे**-सर्वाङ्ग व्याप्नुत इति। सर्वाङ्ग शब्द से 'तत्सर्वादेः पथ्यङ्क कर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति'[153] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (सर्वांग + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ख को 'ईन' आदेश। अकार लोप तथा 'णत्व' विधान। प्रथमा बहुवचन।

179. **काण्डीरः**-काण्डः अस्य अस्ति इति। काण्ड शब्द से 'काण्डाण्डादीरन्नी रचौ'[154] सूत्र से ईरन् प्रत्यय। (काण्ड + ईरन् (ईर))। अकार लोप। प्रथमा एकवचन।

180. **खाड्गिकः**-खड्गः प्रहरणम् अस्य इति। खड्ग शब्द से 'प्रहरणम्'[155] सूत्र से 'ठञ्' प्रत्यय। (खड्ग + ठञ् (ठ))। 'ठस्येकः' सूत्र से ठ को इक आदेश, अकार लोप। प्रथमा एकवचन।

181. **तनुत्रवान्**-तनुम् त्रायत इति तनुत्रम्। 'तनुत्रम् अस्य अस्ति' इति तनुत्र शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[156] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (तनुत्र + मतुप् (मत्))। अकार से परे मत् को वत्। पुल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन।

182. **शार्ङ्गी**–शार्ङ्गं अस्य अस्ति इति। शार्ङ्ग शब्द से 'अत इनिठनौ'[157] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। (शार्ङ्ग + इनि (इन्))। अकार लोप। प्रथमा एकवचन पुल्लिंग।

हित्वा .... निर्भयः।। 11।।

183. **आशितङ्गवीनानि**–आशिताः (आशितवत्यः) एषु इति। 'आशितङ्गव' शब्द से 'अषडक्षाशितङ्ग्वलंकर्मालम्बपुरुषाऽध्युत्तरपदात्खः'[158] सूत्र से स्वार्थ में 'ख' प्रत्यय। निपातन से पूर्वपद को मुम् (म्)आगम। (आशित + म् (मुम्) + व + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ख को ईन आदेश। प्रथमा बहुवचन नपुसंकलिङ्ग।

व्रातीनव्यालदीप्राऽस्त्रः .... नैकटिकाश्रमान्।। 12।।

184. **व्रातीन**–व्रातानाम् इदम्। व्रात शब्द से 'तस्येदम्'[159] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (व्रात + अण् (अ))। आदि वृद्धि, अकार लोप। व्रातेन जीवति इति। 'व्रात' शब्द से 'व्रातेन जीवति'[160] सूत्र से 'खञ्' प्रत्यय। (व्रात + खञ् (ख))। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को ईन आदेश। अकार लोप।

185. **पर्षद्वलान्**–पर्षद् अस्ति येषा ते इति। पर्षद् शब्द से 'रजः कष्यासुतिपरिच्छदो वलच्' सूत्र से 'वलच्' प्रत्यय। (पर्षद् + वलच् (वल))। द्वितीया बहुवचन।

186. **नैकटिक**–निकटे वसन्ति इति। निकट शब्द से 'निकटे वसति'[161] सूत्र से 'ठक्' प्रत्यय। (निकट + ठक् (ठ)) आदिवृद्धि तथा 'ठस्येक' से ठ को 'इक' आदेश।

परेद्यव्यद्य .... अगात्।। 13।।

187. **प्रियम्भावुकताम्**–'प्रियम्भावुकस्य भावः' इति। 'तस्यभावस्त्वत्तलौ'[162] सूत्र से 'तल्' प्रत्यय। (प्रियम्भावुक + तल् (त))। स्त्रीत्व विवक्षा एवं द्वितीया एकवचन रूप।

अतिष्ठद्गु .... रविम्।। 14।।

188. **सन्धयाम्**–अहोरात्रस्य सन्धौ भवाः इति। सन्धि शब्द से 'तत्र भवः'[163] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (सन्धि + यत् (य)) इकार लोप। स्त्रीलिंग सप्तमी एकवचन।

189. **प्रातस्तराम्**–अतिशयेन प्रातः इति। 'प्रातः' शब्द से 'द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ'[164] सूत्र से 'तरप्' प्रत्यय। (प्रातस् + तरप् (तर))। स्त्रीलिंग द्वितीय एकवचन रूप।

190. **पतत्रिभ्यः**–पतत्रम् अस्ति येषां ते इति। पतत्र शब्द से, 'अतइनि ठनौ'[165] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। (पतत्र + इनि (इन्))। पञ्चमी बहुवचन।

ददृशे .... सौमित्रयेऽसकौ।। 15।।

191. **असकौ**–कुत्सिता असौ इति। सर्वनाम अस् शब्द से 'अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः'[166] सूत्र से 'अकच् प्रत्यय'। टिलोप। (अस् + अकच्)।

192. **अभीकया**-अभीकामयते इति। 'अनुकाभिकाभीकः कमिता'[167] सूत्र से कन् प्रत्यय। (अभी + कन् (क))। स्त्रीलिंग तृतीया एकवचन।

दधाना .... पक्षतौ।। 16।।

193. **बलिभम्**-बलयः अस्मिन् सन्ति इति। 'बलि' शब्द से 'तुन्दिबलिवटेर्भः'[168] सूत्र से 'भ' प्रत्यय। (बलि + भ)। नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

194. **कर्णजाह**-कर्णयोः मूले इति। कर्ण शब्द से 'तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ'[169] सूत्र से 'जाहच्' प्रत्यय। (कर्ण + जाहच् (जाह))।

195. **पक्षतौ**-पक्ष्स्य मूलम् इति। पक्ष शब्द से 'पक्षात्तिः'[170] सूत्र से 'ति' प्रत्यय। (पक्ष + ति) सप्तमी एकवचन।

सुपाद .... धनेन सा।। 17।।

196. **प्रथिमानम्**-पृथोः भावः इति। पृथु शब्द से 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा'[171] सूत्र से 'इमनिच्' प्रत्यय। (पृथु + इमनिच् (इमन्))। पृथु के 'ऋ' को 'र' टि लोप। द्वितीया एकवचन।

उन्नसं .... सुहसानना।। 18।।

197. **शंयून**-शम् (सुखम्) अस्ति येषां ते। 'कंशंभ्यां बभयुस्तितु तयसः'[172] सूत्र से 'शम्' शब्द में 'युस्' प्रत्यय। (शम् + युस्)। अनुस्वार होने पर शंयुस्। द्वितीया बहुवचन।

198. **स्त्रग्विणी**-स्त्रग् अस्ति यस्याः सा इति। स्त्रग् शब्द से 'अस्मायामेधास्त्रजो विनिः'[173] सूत्र से 'विनि' प्रत्यय। (स्त्रग् + विनि (विन्))। स्त्रीलिंग में 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' सूत्र से ङीप् प्रत्यय। (स्त्रग्विन् + ङीप् (ई))। णत्व विधान।

प्राप्य .... प्रियंवदा।। 19।।

199. **अनुका**-अनुकामयते इति। 'अनु' शब्द से 'अनुकाभिकाभीकः कमिता'[174] सूत्र से 'कन्' प्रत्यय। (अनु + कन् (क))। स्त्रीलिंग में 'टाप्' प्रत्यय।

200. **प्रियाकर्तुम्**-प्रिया-प्रियं करोति इति। प्रिय शब्द से 'सुखप्रियादानुलोम्ये'[175] सूत्र से 'डाच्' प्रत्यय। (प्रिय + डाच् (आ))। टिलोप।

सौमित्रे! .... पुरुषायुषम्।। 20।।

201. **सौमित्रे**-सम्बोधन-पूर्ववत्।

202. **स्वभोगीनाम्**-स्वस्य भोगः इति स्वभोगः। स्वभोगाय हिता इति स्वभोग शब्द से 'आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्खः'[176] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (स्वभोग + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन' आदेश। अकार लोप (स्वभोग् + ईन = स्वभोगीन्) षष्ठी बहुवचन।

तामुवाच स .... किमभीरूररार्थसे।। 21।।

203. **गौष्ठीने**–भूतपूर्वम् गोष्ठम् इति। 'गोष्ठ' शब्द से 'गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे'[177] सूत्र से 'खञ्' प्रत्यय। (गोष्ठ + खञ् (ख))। आदिवृद्धि। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[178] सूत्र से 'ख' को ईन आदेश। अकार लोप। (गोष्ठ् + ईन (गौष्ठीन))। सप्तमी एकवचन।

मानुषानभिलष्यन्ती .... कथमञ्चसि।। 22।।

204. **दिव्याः**–दिवि भवा दिव्याः इति। 'दिवि' शब्द से 'द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्'[179] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (दिवि + यत् (य)) इकारलोप। प्रथमा बहुवचन।

205. **धर्मिणी**–धर्माः सन्ति अस्याः सा इति। धर्म शब्द से 'धर्मशीलवर्णऽन्ताच्च'[180] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। (धर्म + इनि (इन्))। अकार लोप। स्त्रीलिङ्ग में ङीप् (ई) प्रत्यय।

206. **मानुषान्**–मनोः अपत्यानि पुमांसः इति। 'मनु' शब्द से 'मनोर्जातावञ्यतौषुक् च'[181] सूत्र से 'अञ्' प्रत्यय। षुक् का आगम। (मनु + षुक् (ष) + अञ् (अ)) आदिवृद्धि। मानुष–प्रथमा बहुवचन।

उग्रम्पश्याऽऽकुलेऽरण्ये .... कथं न वा।। 23।।

207. **शालीनत्व**–शालाप्रवेशमर्हति इति। 'शाला' शब्द से 'शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः'[182] सूत्र से 'खञ्' प्रत्यय। (शाला + खञ् (ख))। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन' आदेश। (शाला + ईन) शालीनस्य भावः इति। 'तस्यभावस्त्वत्तलौ' सूत्र से 'त्व' प्रत्यय।

राघवं .... औपकर्णिकलोचनः।। 24।।

208. **स्वामी**–स्वम्स्याऽस्ति इति। 'स्व' शब्द से 'स्वामिन्नैश्वर्ये'[183] सूत्र से 'आमिनच्' प्रत्यय। (स्व् + आमिनच् (आमिन्))। प्रत्यय। अकार लोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

209. **कान्तावान्**–कान्ता अस्ति यस्य सः इति। कान्ता शब्द से तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[184] सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (कान्ता + मतुप् (मत्)) अकार से परे मत् को वत्। पुल्लिङ्ग एकवचन।

210. **औपकर्णिकः**–कर्णयोः समीपमुपकर्ण तत्र बाहुल्येन भवतः इति। 'उपकर्ण' शब्द से 'उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्'[185] सूत्र से 'ठक्' (ठ) प्रत्यय। 'ठ' को 'इक्' आदेश। आदि वृद्धि एवं अकार लोप। (उपकर्ण + ठक् < इक्)।

वपुश्चान्दनिकं .... यस्यौपजानुकौ।। 25।।

211. **चान्दनिकम्**–'चन्दनेन सम्पादि' इति। 'चन्दन शब्द से 'सम्पादिनि'[186] सूत्र से 'ठञ्' प्रत्यय। (चन्दन + ठञ् (ठ)) आदि वृद्धि। ठ का इक तथा अकार लोप। नपुंसकलिङ्ग।

212. **कार्णवेष्टकिकम्**–कर्णवेष्टकाभ्याम् सम्पाद इति 'सम्पादिनि'[187] सूत्र से 'ठञ्' प्रत्यय। (कर्णवेष्टक + ठञ् (ठ)) आदिवृद्धि। ठ को इक तथा अकार लोप।

213. **सर्वकर्मीणौ**–सर्वकर्माणि व्याप्नुत इति। 'सर्वकर्मन्' शब्द से 'तत्सर्वादेः पथ्यंङ्ककर्मपत्रपात्रं व्याप्नोति'[188] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (सर्वकर्मन् + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन' प्रत्यय। (सर्वकर्मन् + ईन) नान्त टि लोप। प्रथमा द्विवचन।

214. **औपजानुकौ**–जान्वोः समीपम् इति। 'उपजानु' शब्द से 'उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक'[189] सूत्र से 'ठक्' प्रत्यय। (उपजानु + ठक् (ठ))। आदि वृद्धि। 'इसुसुक्तान्तान्तकः' सूत्र से 'क' प्रत्यय।

बद्धा .... अन्यदुर्वहम्।। 26

215. **औपनीविकः**–नीव्या समीप्यमुपनीवि इति। 'उपनीवि' शब्द से 'उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्'[190] सूत्र से 'ठक्' प्रत्यय (उपनीवि + ठक्) आदि वृद्धि। 'इसुसुक्तान्तान्तकः' सूत्र से क प्रत्यय।

अस्त्रीकः .... मा मचः।। 29।।

216. **स्त्रीमान्**–प्रशस्ता स्त्रीयस्याऽस्ति सः। 'स्त्री' शब्द से 'तदस्याऽस्यत्यस्मिन्निति'[191] सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (स्त्री + मतुप् (मत्त))। पुल्लिङ्ग एकवचन।

217. **पुष्यतितराम्**–अतीव पुष्यति इति। पुष्यति शब्द स 'तिङ्श्च'[192] सूत्र से 'तरप्' प्रत्यय। (पुष्यति + तरप् (तर))। स्त्रीलिङ्ग द्वितीय एकवचन।

218. **अस्त्रीकः**–अविद्यमाना स्त्री यस्य सः इति। 'अस्त्री' शब्द से 'न घृतश्च'[193] सूत्र से 'कप्' (क) प्रत्यय। 'न कपि' सूत्र से ह्रस्व का प्रतिषेध किया। (अस्त्री + कप् (क)) पुल्लिङ्ग एकवचन।

तस्याः सासद्यमानाया .... मुखम् ।। 31।।

219. **लोलूयावान्**–लोलूया अस्ति यस्य सः' इति। लोलूया शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[194] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (लोलूया + मतुप् (मत्))। आकारान्त से परे मत् को वत्। पुल्लिङ्ग एकवचन।

220. **कौक्षेयम्**–कुक्षौ भवः इति। 'कुक्षि' शब्द से 'दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्ढञ्'[195] सूत्र से 'ढञ्' प्रत्यय। (कुक्षि + ढञ् (ढ))। आदिवृद्धि। इकार लोप। एवं ढ को एय आदेश। नपुसंकलिङ्ग।

कृते.. चेष्टितं तयो।। 35।।

221. **दौर्भागिनेयौ**–दुर्भगयोः अपत्ये पुमांसौ इति। 'दुर्भग' शब्द से 'स्त्रीभ्यो ढक्'[196] सूत्र से 'ढक्' प्रत्यय। (दुर्भग + ढक् (ढ))। आदिवृद्धि। अकार लोप। 'ढ' को एय आदेश। 'कल्याण्यादीनामिनङ'[197] सूत्र से इनङ् आदेश। (दौर्भाग् + इनङ् + एय)। प्रथमा द्विवचन।

222. **सौभागिनेयस्य**–सुभगायाः अपत्यम् पुमान् इति। सुभाग शब्द से 'स्त्रीभ्यो ढक्'[198] सूत्र से 'ढक्' प्रत्यय। (सुभाग + ढक् (ढ))। 'तद्धितेष्वचामादेः' सूत्र से आदि वृद्धि। (सौभाग + ढ) 'कल्याण्यादीनामिनङ्' सूत्र से इनङ् आदेश। (सौभाग् + इनङ् + एय)। षष्ठी एकवचन।

मम रावणनाथाया .... क्षमम्।। 36।।

223. **तापसकात्**–तप: अस्याऽस्ति स: इति। 'तपस्' शब्द से 'अण् च'[199] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। आदिवृद्धि। (तापस् + अण् (अ)) तापस। कुत्सित: तापस: इति। 'तापस' शब्द से 'कुत्सिते'[200] सूत्र से 'कन्' (क) प्रत्यय। (तापस + कन् (क))। पञ्चमी एकवचन पुल्लिङ्ग।

जक्षिमोऽनपराधेऽपि .... क्षमामहे।। 39।।

224. **कुतस्त्यम्**–कुत: आगतम् इति। 'कुतस्' शब्द से 'अव्ययात्यप्'[201] सूत्र से 'त्यप्' प्रत्यय। (कुतस् + त्यप् (तय))। नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

मृगयुमिव .... पतत्रिराजम्।। 44।।

225. **दाहवतीम्**–दाहो: अस्या: अस्ति इति। 'दाह' शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[202] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (दाह + मतुप्)। अकार से परे मत् को वत्। स्त्रीलिंग द्वितीया एकवचन।

पञ्चम सर्ग

निराकरिष्णू .... खरदूषणौ।। 1।।

226. **परित:**–पूर्ववत्।

अथ .... यमसाच्चक्रतुद्विषौ।। 13।।

227. **यमसात्**–यमाधीनम् इति। 'यम' शब्द से 'तदधीनवचने'[203] सूत्र से 'साति' (सात) प्रत्यय। (यम + साति (सात्))।

दण्डकानध्यवात्तां .... भूमिवर्धनौ।। 6।।

228. **प्रकाण्डकौ**–प्रकाण्डौ एव प्रकाण्डकौ। 'प्रकाण्ड' शब्द से 'कुत्सिते'[204] सूत्र से 'कन्' (क) प्रत्यय। (प्रकाण्ड + कन् (क))। प्रथमा द्विवचन।

229. **दण्डकान्**–दण्ड: राजा पलित: देश: इति। 'दण्ड' शब्द से 'कुत्सिते'[205] सूत्र से 'कन्' प्रत्यय। (दण्ड + कन् (क))। द्वितीया बहुवचन।

यद्यहं नाथ! .... दुर्बल:।। 8।।

230. **हतबान्धबा**–बन्धू एवं बान्धवौ इति। 'बन्धू' शब्द से स्वार्थ में 'तस्येदम्'[206] सूत्र से 'अण्' (अ) प्रत्यय। (बन्धु + अण्) आदिवृद्धि (बान्धु + अ) 'ओर्गुण:' सूत्र से 'उ' को गुण 'ओ' तथा अयादि विधान। हतौ बान्धवा यस्या: सा इति।

231. **चार:** – चर एव चार: इति। 'चर' शब्द से 'प्रज्ञादिभ्यश्च'[207] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (चर + अण् (अ)) आदिवृद्धि। अकार लोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

वृतस्त्वं .... उन्मना:।। 10।।

232. **प्रमादवान्**–नित्यं प्रमादः अस्ति यस्य सः इति। प्रमाद शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति'[208] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (प्रमाद + मतुप् (मत्))। अकार से परे मत् को वत्। पुल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन।

233. **अत्यन्तीनत्वम्**–अत्यन्तम् गामी इति। 'अत्यन्त' शब्द से 'अवारपाराऽत्यन्तानुकामं गामी'[209] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (अत्यन्त + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[210] सूत्र से ख को ईन आदेश। (अत्यन्त + ईन)। अकार लोप। अत्यन्तीनस्य भावः इति। 'तस्यभावस्त्वतलौ' सूत्र से 'त्व' प्रत्यय। (अत्यन्तीन + त्व)। नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

अध्यवरेषु .... दुश्च्यवनोऽधुना।। 11।।

234. **अग्निचित्वत्सु**–अग्निम् चितवन्तः तेषु इति। 'तसौ मत्वर्थे'[211] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (अग्निचित् + मतुप् (मत्))। 'झयः' सूत्र से मत् को वत्। सप्तमी बहुवचन।

235. **महेन्द्रियम्**–महेन्द्रदेवता सम्बद्धम्। महेन्द्र देवता यस्य इति। 'महेन्द्र' शब्द से 'महेन्द्राद्घणौ च'[212] सूत्र सू 'घ' प्रत्यय। (महेन्द्र + घ) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से घ को 'इय' आदेश। अकार लोप। द्वितीया एकवचन।

आमिक्षीयं .... राक्षसाः।। 12।।

236. **आमिक्षीयम्** = आमिक्षायै हितम् इति। 'अमिक्षा' शब्द से 'विभाषा हविरपूपादिभ्यः'[213] सूत्र से पक्ष में 'छ' प्रत्यय। (अमिक्षा + छ)। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'छ' को 'ईय' आदेश। अकारलोप। (आमिक्ष् + ईय) नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

237. **पुरोडाश्यम्**–पुरोडाशाय हितम् इति। 'पुरोडाश' शब्द से 'विभाषा हविरपूपादिभ्यः'[214] सूत्र से विकल्प में 'यत्' प्रत्यय। (पुराडाश + यत् (य))। अकारलोप। नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

238. **औषधम्**–औषधिः एव औषधम् इति। 'औषधि' शब्द से 'औषधेरजातौ'[215] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (औषधि + अण् (अ))। आदिवृद्धि। इकार लोप। नुपंसकलिङ्ग एकवचन रूप।

239. **हैयङ्गवीनम्**–ह्योगोदोहस्य विकारः। विकार अर्थ में 'ह्यग्' शब्द के स्थान पर 'हैयङ्गवीनं संज्ञायाम्'[216] सूत्र से 'हियङ्गु' आदेश तथा 'खञ्' निपातन। (ह्यग् < हियङ्गु + खञ्) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को ईन आदेश। अयादि विधान।

युवजानिः .... शिलीमुखैः।। 13।।

240. **कालकल्पैः**–ईषदसाप्ताः कालाः इति। 'काल' शब्द से 'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः'[217] सूत्र से 'कल्पप्' प्रत्यय। (काल + कल्पप् (कल्प))। तृतीया एकवचन।

मांसानि .... दिशः।। 14।।

241. **साधनीयानि**–साधनाय हितानि इति। 'साधन' शब्द से 'तस्मै हितम्'[218] सूत्र से 'छ' प्रत्यय। (साधन + छ)। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[219] सूत्र से छ को 'ईय' आदेश। अकार लोप। नपुसंकलिङ्ग बहुवचन।

242. **देवता**–पूर्ववत्।

कुरू बुद्धिं .... नय।।15।।

243. **कुशाग्रीयाम्**–कुशाग्रम् इव बुद्धिः इति। 'कुशाग्र' शब्द से 'कुशाग्राच्छः'[220] सूत्र से 'छ' प्रत्यय। (कुशाग्र + छ) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'छ' को 'ईय' आदेश। अकार लोप। स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन।

244. **अनुकामीनताम्**–अनुकामं गामी इति। 'अनुकाम' शब्द से 'अवारपारात्यन्तानुकामं गामी'[221] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (अनुकाम + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन' आदेश। अनुकामीन। अनुकामीनस्य भावः इति 'तस्यभावस्ऽवतलौ' सूत्र से तल् प्रत्यय। द्वितीया एकवचन।

245. **परम्परीणाम्**–परान् च परतरान् च अनुभवति इति। परम्परा शब्द से 'परोवरपरपरपुत्रपौत्रमनुभवति'[222] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (परम्परा + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन' प्रत्यय। अकार लोप। णत्व विधान। स्त्रीलिंग द्वितीया एकवचन।

246. **पुत्रपौत्रीणताम्**–पुत्रान् च पौत्रान् च अनुभवति इति। 'पुत्रपौत्र' शब्द से 'परोवरपरंपरपुत्रपौत्रमनुभवति'[223] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (पुत्रपोत्र + ख) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां पत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन' आदेश णत्व विधान। पुत्रपौत्रीणस्य भावः अर्थ में 'तस्यभावस्त्वतलौ' सूत्र से तल् प्रत्यय। स्त्रीलिंग में 'टाप' प्रत्यय। द्वितीया एकवचन।

सहायवन्त .... श्वसीः।।16।।

247. **सहायवन्तः**–सहायाः सन्ति येषां ते इति। 'सहायः' शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति'[224] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (सहाय + मतुप् (मत्))। अकारान्त से परे मत् को वत्। प्रथमा बहुवचन पुल्लिङ्ग शब्द।

योषद्वृन्दारिका .... न्यग्रोधपरिमण्डला।।18।।

248. **वृन्दारिका**–वृन्दं गुणवृन्दमस्ति यस्याः सा इति। 'शृंगवृन्दाभ्यामारकन्'[225] सूत्र से 'आरकन्' प्रत्यय। (वृन्द + आरकन्)। वृन्दाक स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय।

न तं पश्यामि .... भव।।21।।

249. **सुकृती**–प्रशस्तं सुकृतम् अस्य अस्ति इति। 'सुकृत' शब्द से 'अत इनिठनौ'[226] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। (सुकृत + इनि (इन्))। अकार लोप। पुल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन।

प्रत्यूचे .... रावणोह्यहम्।। 23।।

250. **रावणः**–रवणस्य अपत्यम् पुमान् इति। 'शिवादिभ्योऽण्'[227] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (रवण + अण् (अ))। आदिवृद्धि। अकार लोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

मामुपास्त .... अनादरेक्षितः।। 24।।

251. **याष्टीकाः**–यष्टिः प्रहरणं येषाम् ते इति। 'यष्टि' शब्द से 'शक्तियष्टयोरीकक्'[228] सूत्र से 'ईकक्' प्रत्यय। (यष्टि + ईकक् (ईक))। आदिवृद्धि। इकारलोप। पुल्लिङ्ग बहुवचन।

विरूग्णोदग्रधाराऽग्रः .... बली।। 25।।

252. **बलिनम्**–बलम् अस्य अस्ति इति। 'बल' शब्द से 'अत इनिठनौ'[229] सूत्र से 'इनि' (इन्) प्रत्यय। (बल + इनि)। अकार लोप। पुल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन–बली, द्वितीया एकवचन बलिनम् रूप।

253. **शतधा**–शतेन प्रकारैः इति। 'शत' शब्द से 'संख्यायाः विद्यार्थे धा'[230] सूत्र से 'धा' प्रत्यय। (शत + धा) अव्यय पदः।

कृत्या .... तृणवदत्यजम्।। 26।।

254. **ऐरावतम्**–इरा (जलम्) अस्ति यस्य सः इति इरा शब्द से 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्'[231] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (इरा + मतुप् (मत्))। अकार से परे मत को वत्। इरावति भवः अर्थ में 'तत्र भवः' सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (इरावत् + अण् (अ)) आदिवृद्धि। द्वितीया एकवचन।

255. **अनुपयोगित्वात्**–अनुपयोगेः भावः इति। 'तस्य भावस्त्वतलौ'[232] सूत्र से 'त्व' प्रत्यय। (अनुपयोगि + त्व)। पञ्चमी एकवचन।

अहोपुरुषिकां .... सदा।। 27।।

256. **अहोपुरुषिकाम्**–अहोपुरुष इति यस्या क्रियायाम् सा इति। अहो पुरुष शब्द से ठन् प्रत्यय। (अहोपुरुष + ठन् (ठ)) 'ठस्येकः' से ठ को इक। स्त्रीत्व की विवक्षा में 'अजाद्यष्टाप्'[233] सूत्र से टाप् प्रत्यय तथा 'प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात् इदाप्सुपः' सूत्र से 'इका' (अहोपुरुष + इका) द्वितीया एकवचन।

अतुल्यमहसा .... तद्विनिग्रहे।। 29।।

257. **तुल्य**–तुलया संमितम् इति। 'तुला' शब्द से नौवयोधर्मविषमूल–मूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यबध्यानाभ्यसमसमितसंमितेषु'[234] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय (तुला + यत्) अकार लोप।

भवन्तं .... सार्वलौकिकम्।। 33।।

258. **कार्तवीर्यः**-कृतवीर्यस्य अपत्यम् पुमान् इति। 'तस्याऽपत्यम्'[235] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (कृतवीर्य + अण् (अ))। आदिवृद्धि। अकार लोप।

259. **सार्वलौकिकम्**-सर्वस्मिन् लोके विदितः इति। 'सर्वलोक' शब्द से 'लोकसर्वलोकाट्ठञ्'[236] सूत्र से 'ठञ्' प्रत्यय। (सर्वलोक + ठञ् (ठ))। 'ठस्येकः' सूत्र से 'ठ' को 'इक' आदेश। 'अनुशतिकादीनाम् च' सूत्र से उभयपद वृद्धि-(सार्वलाक + इक) अकार लोप। सार्वलौकिक-द्वितीया एकवचन।

सुखजातः .... बलिविग्रहम्।।38।।

260. **माल्य**-माला एवं माल्यम्-पूर्ववत्।

अघानि .... क्षुद्रमानसम्।।40।।

261. **मानसम्**-मनः एव मानसम् इति। (मनस् + अण्)

यद् गेहे .... पौरूषं न तत्।।41।।

262. **यज्ञके**-कुत्सितो यज्ञो ते इति। 'यज्ञ' शब्द से 'कुत्सिते'[237] सूत्र से 'क' प्रत्यय। (यज्ञ + क) सप्तमी एकवचन।

263. **पौरुषम्**-पुरुषस्य कर्म इति। 'हायनान्तयुवादिभ्योऽण्'[238] सूत्र से 'अण्' प्रत्यय। (पुरुष + अण् (अ))। आदिवृद्धि। अकार लोप। द्वितीया एकवचन।

चिरलोषितं .... क्षत्रियकान्तिके?।।42।।

264. **क्षत्रियकाऽन्तिके**-क्षत्रस्य अपत्यम् इति। 'क्षत्र' शब्द से 'क्षत्राद्घः'[239] सूत्र से 'घ' प्रत्यय। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[240] सूत्र से घ को 'इय' आदेश। (क्षत्र + घ < इय) अकार लोप क्षत्रिय। कुत्सितः क्षत्रियः इति। 'क्षत्रिय' शब्द से 'कुत्सायाम् कन्' सूत्र से कन् प्रत्यय। (क्षत्रिय + कन् (क)) क्षत्रियक। क्षत्रियकस्य अन्तिकः इति। (क्षत्रियक + ङस् अन्तिक + सु) दीर्घ सन्धि तथा सप्तमी एकवचन रूप।

वनतापसके .... खरदूषणौ।।43।।

265. **वनतापसके**-कुत्सित तापसकः इति। 'कुत्सायाम् कन्'[241] सूत्र से 'कन्' प्रत्यय। (वनतापस + कन्) वनतापसक।

त्वं तु .... नः सदा।।44।।

266. **नित्यम्**-नियमेन भवम् इति। 'नि' अव्यय से 'अव्ययात्त्यम्'[242] सूत्र से 'त्यप्' (त्य) प्रत्यय। (नि + त्यप्)। नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

शीर्षच्छेद्यमतोऽहं .... वनौकसौ।।45।।

267. **शीर्षच्छेदयम्**–शीर्षस्य छेद:' इति। 'शीर्षच्छेद' शब्द से 'शीर्षच्छेदाद्यञ्च'[243] सूत्र से 'यत्' प्रत्यय। (शीर्षच्छेद + यत् (य))। अकार लोप। द्वितीया एकवचन।

हरामि .... सन्तनु।। 47।।

268. **अभ्यमित्रीण:**–अभ्यमित्रम् अलम् गच्छत् इति। 'अभ्यमित्र' शब्द से 'अभ्यमित्राच्छ च'[244] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। 'आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[245] सूत्र से 'ख' को 'ईन' आदेश। अकारलोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

तत: चित्रियमाणोऽसौ .... लोभयन्।। 48।।

269. **हेमत्नमय:**–हेम्न: रत्नानाम् च विकार: इति। विकार अर्थ में 'मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयो:'[246] सूत्र से 'मयट्' प्रत्यय। (हेमरत्न + मयट् (मय))। पुल्लिङ्ग एकवचन।

270. **यथामुखीन:** – 'यथामुखम् दर्शन:' इति। 'यथामुख' शब्द से 'यथामुखसंमुखस्य दर्शन: ख:'[247] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। 'आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'ख' को 'ईन' आदेश। (यथामुख + ख ८ ईन)। अकार लोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

एष .... राघवम्।। 54।।

271. **ज्ञातेयम्** – ज्ञाते: कर्म इति। 'ज्ञाति' शब्द से 'कपिज्ञात्योर्ढक्'[248] सूत्र से 'ढक्' प्रत्यय। (ज्ञाति + ढक् (ढ))। 'आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[249] सूत्र से ढ को 'एय' आदेश। ईकार लोप। नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

आप्यानस्कन्धकण्ठांऽसं .... क: क्षम:? ।। 56।।

272. **काकुत्स्थम्**–पूर्ववत्।

मृषोद्यं .... शपन्वशी।। 60।।

273. **वशी**–वश: भाव : इति। 'वश' शब्द से 'अत इनि ठनौ'[250] सूत्र से 'इनि' प्रत्यय। (वश + इनि (इन्)) अकार लोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

गते .... मृदलाबुन:।। 61।।

274. **शिखी**– 'शिखा अस्य अस्ति इति। 'शिखा' शब्द से 'व्रीह्यादिभ्यश्च'[251] सूत्र से 'ईनि' प्रत्यय। (शिखा + इनि (इन्)) आकार लोप (यस्येति च) पुल्लिङ्ग एकवचन।

275. **अक्षमालावान्**–अक्षमाला अस्या अस्ति इति। 'अक्षमाला' शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[252] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (अक्षमाला + मतुप् (मत्))। आकार से परे मत् को वत्। पुल्लिङ्ग एकवचन।

276. **मृदलाबुन :** अलाब्वा: विकार: इति। 'अलाबु' शब्द से विकार इति 'ओरञ्'[253] सूत्र से 'अञ्' प्रत्यय। (अलाबु + अञ्) किन्तु– 'फले लुक्' सूत्र से फल अर्थ में 'अञ्' प्रत्यय का लोप। अलावु मृद् च अलाबुश्च–समाहार द्वन्द्व होने से नपुंसकलिङ्ग।

कमण्डलुकपालेन .... दण्डवान् ।। 62 ।।

277. **मृजावता**– 'मृजाऽस्ति यस्य' इति। 'मृजा' शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्'[254] सूत्र से 'मतुप्' प्रत्यय। (मृजा + मतुप् (मत्))। अकारान्त से परे मत् को वत्। (मृजा + वत्) तृतीया एकवचन।

278. **लाक्षिके**–लाक्षया रक्ते इति। 'लाक्षा' शब्द से 'लाक्षारोचनाट्ठक्'[255] सूत्र से ठक् प्रत्यय। (लाक्षा + ठक् (ठ))। 'ठस्येक:' से ठ को इक आदेश। आकार लोप। लाक्षिक। सप्तमी एकवचन।

279. **दण्डवान्** – दण्ड: अस्य अस्ति इति। 'दण्ड' शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्निति: मतुप्'[256] सूत्र से मतुप् प्रत्यय। (दण्ड + मतुप् (मत्)) अकारान्त से परे मत् को वत्। पुल्लिङ्ग एकवचन।

सन्दिदर्शयिषु: .... सुखाभाव।। 64 ।।

280. **क्षापाट्ताम्**–क्षपाटस्य भाव: ' इति। 'क्षपाट' शब्द से 'तस्य भावस्त्वतलौ'[257] सूत्र से 'तल' प्रत्यय। (क्षपाट् + तल् (त))। 'तलन्तस्त्रीयाम्' से स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय। द्वितीया एकवचन।

281. **चङ्क्रमावान्**–चंक्रमा अस्य अस्ति इति। 'चङ्क्रमा' शब्द से 'तदस्याऽस्यस्मिन्नि मतुप्'[258] सूत्र से 'मतुप्' (मत्) प्रत्यय। (चङ्क्रमा + मतुप्)। अकारान्त से परे मत् को वत्। पुल्लिङ्ग एकवचन।

सायन्तनीं .... शुचिस्मिता।। 65 ।।

282. **सांयतनीम्**–सायम् भवा इति। 'सायम्' शब्द से 'सायंचिरं प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च'[259] सूत्र से 'ट्यु' प्रत्यय तथा 'तुट्' का आगम्। (सायम् + तुट् (त्), ट्यु (यु))। 'युवोरनाकौ सूत्र से यु को 'अन्' आदेश। (सायम् + त् + अन) म् को अनुस्वार एवं परसवर्ण विधान सायन्तन तथा स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय। द्वितीय एकवचन।

283. **दिवातनीम्** – दिवा भवा इति। 'दिवा' शब्द से 'सायंचिरं प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च' सूत्र से (दिवा + तुट् (त्), ट्यु (यु))। 'युवोरनाकौ'[260] सूत्र से यु को 'अन्' आदेश। (दिवा + त् + अन) स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय। द्वितीय एकवचन।

284. **सदातन्या**–सदा भवा इति। 'सदा' शब्द से 'सायंचिरं प्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च' सूत्र से (सदा + तुट् (त्), ट्यु (यु))। भुवोरनाकौ सूत्र से यु को 'अन्' आदेश। (सदा + त् + अन) स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय। द्वितीय एकवचन।

का त्वमेकाकिनी .... कथं न वा ।। 66 ।।

285. **एकाकिनी**–एकाकी त्वेक एकक: इति। में असहाया अर्थे में 'एकादाकिनिच्चाऽसहाये'[261] सूत्र से असहाय इति 'एक' शब्द से 'आकिनिच्' प्रत्यय। (एक + आकिनिच्) अकार लोप। एकाकिनि–स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय।

परिपर्युदधे .... सुजीवितम् ।। 69 ।।

286. **भावत्कम्**–भवत्या इदम् इति। 'भवत्' शब्द से 'भवतष्ठक्छसौ'[262] सूत्र से 'ठक्' प्रत्यय। (भवत् + ठक्) आदिवृद्धि 'तद्धितेष्वचामादे:' सूत्र से (भावत् + ठ) 'इसुसुक्तान्तात्क:' सूत्र से ठ को 'क' आदेश। भावत्क। द्वितीया एकवचन।

ओजायमाना .... वच: ।। 76 ।।

287. **अर्ध्यम्**–अर्धार्थम् इदम् इति। 'अर्ध' शब्द से 'पादाऽर्धाभ्यां च'[263] सूत्र से यत् प्रत्यय। (अर्ध + यत् (य))। अकारलोप। अर्ध्यम् नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

महाकुलीन .... तपस्विनाम् ।। 77 ।।

288. **महाकुलीन:** – महाकुले भव: इति। 'महाकुल' शब्द से 'महाकुलादञ्खञौ'[264] सूत्र से 'खञ्' प्रत्यय। (महाकुल + खञ् (ख))। 'आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[265] सूत्र से 'ख' को 'ईन' आदेश। अकार लोप। पुल्लिङ्ग एकवचन।

289. **दाशरथि:** दशरथस्याऽपत्यां पुमान्। पूर्ववत्।

290. **तपस्विनाम्**–तप: अस्ति येषां ते इति। 'तपस्' शब्द से 'तप: सहस्राभ्यां विनीनी'[266] सूत्र से 'विनी' प्रत्यय। (तपस् + विनी (विन्)) षष्ठी बहुवचन।

अध्वरेष्विनां .... वनम् ।। 79 ।।

291. **इष्टिनाम्**–इष्टम् एभि: इति। 'इष्ट' शब्द से 'इष्टादिभ्यश्च'[267] सूत्र से 'इनि' (इन्) प्रत्यय। (इष्ट + इनि) = अकारलोप। षष्ठी बहुवचन।

292. **सर्वदा**–सर्वस्मिन् काले – पूर्ववत्।

293. **राजत्वम्** – राज्ञो भाव: इति। 'राजन्' शब्द से 'तस्यभावस्त्वतलौ'[268] सूत्र से 'त्व' प्रत्यय। (राजन् + त्व)। 'न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य' से न् लोप। नपुसंकलिङ्ग एकवचन।

कृते .... राघवम्? ।। 84 ।।

294. **कानिष्ठनेयस्य** – कनिष्ठाया: अपत्यम् पुमान् इति। 'कनिष्ठा' शब्द से 'कल्याण्यादिनामिनङ्'[269] सूत्र से 'ढक्' प्रत्यय तथा ईनङ् आदेश। (कनिष्ठ + ईन + ढक् (ढ) 'आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से ढ को एय आदेश। अकार लोप। आदि वृद्धि कानिष्ठिनेय षष्ठी एकवचन।

295. **ज्यैष्ठिनेयम्**-ज्येष्ठायाः अपत्यम् पुमान् इति। 'ज्येष्ठा' शब्द से 'कल्याण्यादीनामिनङ्' सूत्र से 'इनङ्' आदेश। 'स्त्रीभ्यो ढक्'[270] सूत्र से 'ढक्' प्रत्यय। (ज्येष्ठा + इनङ् + ढक्)। 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[271] सूत्र से एय, आदि वृद्धि। ज्यैष्ठिनेय – द्वितीया एकवचन।

राक्षसान् .... कः स्मयः।। 85।।

296. **माण्डूकि**–मण्डूकस्य अपत्यम् पुमान् इति। 'मण्डूक' शब्द से 'ढक्च मण्डूकात्'[272] सूत्र से ढक् प्रत्यय। (मण्डूक + ढक्)। किन्तु पक्ष में 'इञ्' प्रत्यय। (मण्डूक + इञ् (इ)) आदिवृद्धि। अकार लोप। स्त्रीलिंग एकवचन।

भिन्ननौक .... निरूद्यतिः।। 88।।

297. **कृष्णिमानम्**-कृष्णस्य भावः इति। 'कृष्ण' शब्द से 'वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च'[273] सूत्र से 'इमनिच्' प्रत्यय। (कृष्ण + इमनिच् (इमन्)) 'टेः' सूत्र से 'टि' लोप। द्वितीया एकवचन।

समुद्रोपत्यका .... मैथिलि! ।। 89।।

298. **पर्वताऽधित्यका**–पर्वतस्य उर्ध्वा भूः अधित्यका इति। पर्वत–अधिपूर्व 'उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारुढयोः'[274] सूत्र से त्यकन् प्रत्यय। (पर्वत – अधि + त्यकन्)। स्त्रीलिंग एकवचन।

299. **समुद्रोपत्यका**–पर्वतस्य आसन्ना भूमिरुपत्यका इति। समुद्र–उपपूर्व 'उपाधिभ्यांयकन्नासन्नारुढयाः'[275] सूत्र से 'त्यकन्' प्रत्यय। (समुद्र – उप + त्यकन् (त्यक)) गुणसन्धि एव स्त्रीलिंग रुप।

300. **हैमी**–हेम्नः विकारः इति। 'हेमन्' शब्द से 'प्राणिरजातिभ्योऽञ्'[276] सूत्र में 'अञ्' प्रत्यय। (हेमन् + अञ्)। 'तद्धितेष्वचामदेः'[277] सूत्र से आदिवृद्धि। 'न लोप प्रातिपदिकान्तस्य' से न का लोप। स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय।

संगच्छ .... तमकिञ्चनम्।। 91।।

301. **पौंस्नि**–पुसांमर्हति पुंसे हिता वा इति। 'पुंस' शब्द से 'स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्'[278] सूत्र से स्नञ् प्रत्यय। (पुंस. + स्नञ् (स्न))। आदिवृद्धि। पौंस्ञन 'नञ्स्नीकक्ख्युंस्तरुणतलुनामामुपंसख्यानम्' सूत्र से स्त्रीलिङ्ग में ङीप् प्रत्यय। सम्बोधन एकवचन।

302. **स्त्रैणम्**-स्त्रीः अर्हति इति स्त्रीभ्यो हितः वा इति 'स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्'[279] सूत्र से 'स्नञ्' प्रत्यय। (स्त्री + नञ् (न)) आदिवृद्धि। णत्व प्रक्रिया। द्वितीया एकवचन।

303. **पापीयान्**-अतिशयेन पापः इति। 'पाप' शब्द से तुलना इति 'द्विवचन विभज्योपपदेतरबीयसुनौ'[280] सूत्र से ईयसुन् प्रत्यय। (पाप + ईयसुन्' (ईयस्)) 'टेः' से टि लोप। पुल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन।

तां प्रातिकूलिकीं .... निशाचरः।। 94।।

304. **प्रातिकूलिकीम्**–प्रतिकूलं वर्तते इति। 'तत्प्रत्युनुपूर्वमीपलोमकुलम्'[281] सूत्र से प्रतिकूल शब्द से 'ठक्' प्रत्यय। (प्रतिकूल + ठक् (ठ)) आदिवृद्धि तथा 'ठस्येक:' से ठ को इक स्त्रीलिङ्ग में 'ङीप्' प्रत्यय। द्वितीय एकवचन रूप।

द्विषन् ! .... पूर्वसरो मम।। 97।।

305. **जघन्यानाम्**–जघनम् इव जघन्य इति। 'जघन' शब्द से 'शाखादिभ्यो य:'[282] सूत्र से 'य' प्रत्यय। (जघन + य) अकारलोप। षष्ठी बहुवचन।

धुन्वन् .... अयुध्यत।। 101।।

306. **सर्वपथीनम्**–सर्वपथान व्याप्नोति इति। 'सर्वपथ' शब्द से 'तत्सर्वादे: पथ्यङ्गमपत्रपात्रं व्याप्नोति'[283] सूत्र से 'ख' प्रत्यय। (सर्वपथ + ख) 'आयनेयीनीयिय: फढखछघां प्रत्ययादीनाम्'[284] सूत्र से ख को ईन आदेश (सर्वपथ + ईन) अकारलोप। द्वितीया एकवचन।

पिशाचमुखधौरेयं .... ध्वजशालिनम्।। 103।।

307. **धौरेयम्**–धुरं वहन्तीति इति। 'धुर' शब्द से 'धुरो यड्ढकौ'[285] सूत्र से ढक् प्रत्यय। (घुर + ढक् (ढ)) एय आदेश। आदिवृद्धि। (घौर + एय) अकार लोप। नपुसंकलिङ्ग।

308. **कद्रथवत्**–कद्रथेन तुल्यम् इति। 'कद्रथ' शब्द से 'तेन तुल्यं क्रिया चेद्वति'[286] सूत्र से 'वति' प्रत्यय। ('कद्रथ + वति' (वत्)) कद्रथवत्। नपुसंकलिङ्ग।

2. 'भट्टिकाव्यम्' में प्रयुक्त 'तद्धित' प्रत्ययांत शब्दों का अर्थ निर्धारण।

प्रथम सर्ग

क्र.सं.	श्लोक संख्या	शब्द	विग्रह		प्रत्यय
1.	1.	सनातन:	सना भव इति	'सायंचिरप्राह्णप्रगेऽव्ययेह्यभ्यष ट्युट्युलौ लुट् च'	ट्युल
1.	3	घनवत्	घनेन तुल्यमिति।	'तेन तुल्यं' क्रियाचेद्वति' (5/1/115)	धन + वति
1.	4.	यथा	येन प्रकारेण अर्थ में	प्रकार वचने थाल् (5/3/23)	यद् + शाल्
1.	5.	शतमन्युकल्प:	ईषदसमाप्त:	'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयर:' (5/3/67)	शतमन्यु + कल्पप्
1.	6.	पद्माऽऽसनकौशलस्य	पद्मासनस्य कौशलं (कुशलस्य भाव: कौशलम्)	'हायनान्तयुवादिभ्योऽण्' (5/1/30)	कुशल + अण्
1.	10.	क्रियावान्	प्रशस्ता क्रिया यस्य स।	'तदस्यास्त्यस्मिनिति मतुप्' (5/2/94)	क्रिया + मतुप्

2.	10.	मनस्वी	प्रशस्तं मनः यस्यास्ति इति	'अस्मायामेधास्रजो विनिः' (5/2/121)	मन + विनि
3.	10.	ऋष्यश्रङ्ग	ऋषीणां समूहः (इवश्रङ्गं यस्यसं)	'पाशादिभ्यो यः' (4/2/49)	ऋषि + य
1.	11.	कर्मठः	कर्मणि घटते इति।	'कर्मणि घटोऽठच्' (5/2/35)	कर्मन् + अठच्
1.	12.	परितः	ठस्य	'पर्यभिभ्याञ्च'	परि + तसिल्
2.	12	अभितः		'पर्यभिभ्याञ्च' (5/3/9)	अभि + तसिल्
1.	13.	उदारवंश्या	उदारश्चाऽसौ वंशः	'तत्र' साधुः (4/4/98)	उदारवंश + यत्
2.	13.	दत्रिमसभ्यतोषे – सभ्य	सभायां साधवः सभ्याः	'सभाया यः' (4/4/105)	सभा + य
1.	14.	कौसल्यया	कौसलस्य राज्ञोऽपत्यं स्त्री	'वृद्धेत्कोशलाजादाञ्ज्यङ' (4/1/172)	कोसल + ज्यङ् + चाप्
2.	14	ततः	तस्मादिति ततः	'पञ्चम्यातसिल्' (5/3/7)	तद् + तसिल्
3.	14	केकयीतः	केकयान् आचष्टे	'अपादानं चाहीयरूहोः' (5/4/45)	केकसी + तसिल्
1	15.	यमिनां	यमाः सन्ति येषां ते।	'अतइनिठनौ' (5/2/115)	यम् + इनि
2	15	वरिष्ठः	अतिशयेन उरूः इत्यर्थे	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	वर् + इष्ठन्
1.	16.	अङ्गवान्	प्रशस्तानि अङ्गानि सन्ति यस्मिन् सः	'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	अङ्ग + मतुप्
	18	यत्	यस्मादिति यत्	'पञ्चम्यातसिल्' (5/3/7)	यद् + तसिल्
1.	20.	अहंयुना	अहमस्यास्तीति अहंयुः तेन	'अहंशुभमोर्युस्' (5/2/180)	अहम् + युस्
2.	20.	शुंभयुः	शुभमस्यास्तीति।	'अहंशुभमोर्युस्' (5/2/180)	शुभम् + युस्
1.	21	क्षात्रम्	क्षस्त्रसयेदम्।	'तस्येदम्' (4/3/120)	क्षत्र् + अण्
2.	21	द्विजत्वम्	द्विजस्य भावः।	'तस्यभावस्त्वतलौ''' (5/1/119)	द्विज + त्व
1.	22.	पुरस्तात्	पूर्वस्मिन्तिति	दिक शब्देभ्यः सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः (5/3/27)	पुर् + अस्ताति
1.	23.	इत्थम्	अनेन प्रकारेण	'इदमस्क्षमुः' (5/3/24)	इदम् + थमु
1.	24	पृष्ठतः	पश्चात्	आद्यादिभ्यस्तसेरूपसख्यानम् वार्तिक-96 पृष्ठ-397	पृष्ठ + तस

1.	25	त्रैमातुरः	तिसृणां मातृणामपत्यं पुमान्	'मातुरूत्संख्या-सं-भद्रपूर्वायाः' (4-1-118)	तिसृ + मातृ + अण्
1.	26.	इषुमति	प्रशस्ता इषवः सन्ति यस्मिन् सः इषुमान्, तस्मिन्	'तदस्याऽस्त्यस्मिन्निति' (5/2/94)	इषव् + मतुप्
2.	26.	कथम्	किम् प्रकारेण	किमश्च (4/1/115)	किम् + थमु
3.	26	माङ्गलिक्यः	मङ्गलं प्रयोजनं यासां ताः	'प्रयोजनम्' (5/1/109)	मङ्गल + ठञ्
1.	27.	पक्षिणः	पक्षौस्तः येषां ते	'अत इनिठनौ' (5/2/115)	पक्षि + इनि

अथ द्वितीयः सर्ग

1.	1.	तेजस्विनाम्	प्रशस्तं तेजोऽस्ति येषां ते।	'अस्मायामेधास्रजो विनिः' (5/2/121)	तेज + विनि
1.	3	साऽमर्षतया (सामर्षता)	अमर्षेण सह वर्तन्ते इति। (तेषां भावः)	'तस्यभावस्त्वतलौ' (5/1/119)	सामर्ष + तल्
1.	4.	नयनाऽम्बुकल्पैः	नयनयोः अम्बूनि ईषदसमाप्तानि तैः।	'ईषदसमाप्तौ कल्पदेश्य-देशीयरः' (5/3/67)	नयनाऽम्बु + कल्पप्
2.	4.	कुमुद्वतीम्	कुमुदानि सन्ति यस्यां सा।	'कुमुद-नड-वेतसेभ्योड्मतुप्' (4/2/87) 'झयः' (4/2/85) म्-व्	कुमुद् + ड्मतुप्
1.	5.	नेत्रकल्पैः	ईषदसमाप्तानि नेत्राणि तैः।	'ईषद्समाप्तौ कल्पब-देश्यदेशीयरः' (5/3/67)	नेत्र + कल्पप्
2.	5.	विस्मयवन्ति	विस्मयोऽस्ति येषां तानि।	'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	विस्मय + मतुप्
1.	6.	पद्मिनि	पद्मानि यस्यां सन्तीति सा।	'अतइनिठनौ' (5/2/115)	पद्म + इनि
2.	6	कुमुद्ती	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1.	10.	अरविन्दव्यतिषङ्गवान	अरविन्दव्यतिषङ्गस्य अस्ति	'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	अरविन्दव्यतिषङ्ग + मतुप्
1.	11.	काकुत्स्थः	ककुत्सथस्य अपत्यम्	'तस्याऽपत्यम्' (4/1/92)	ककुद + अण्
1.	18.	सैकतेषु	सिकताः सन्ति येषां तानि।	'देशेलुबिलचौ च' (5/2/105)	सिकता + अण्
1.	21.	यथावत्	यथा अर्हतीति	'तदर्हम्' (5/1/117)	यथा + वति
1.	24.	पततित्रणः	पतत्त्राणि सन्ति येषां	'अतइनिठनौ' (5/2/115)	पतन्त्र + इनि
1.	25.	तत्र	तस्मिन्निति तत्र	'सप्तम्यास्त्रल्' (5/3/10)	तत् + त्रल्

1.	26.	आतिथ्यम्	अतिथ्यर्थम्	'अतिथेर्ञ्यः' (5/4/26)	अतिथि + ञ्य
2.	26	माल्यैः	माला एव माल्यम्	'चतुवर्णादीनां स्वाऽर्थ उपसंख्यानम्' (5/1/124)	माला + ष्यञ् वार्तिक
1.	27.	दैत्याः	दितेरपत्यानि पुमांसः	'दित्यदित्यादित्यपत्युत्तर-पदाण्ण्यः' (4/1/85)	दिति + ण्य
2.	27.	इत्थम्	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1.	28	राघवः	रघोरपत्यं पुमान्	'तस्याऽपत्यम्' (4/1/92)	रघु + अण्
2.	28	धर्म्यम्	धमदिनपेतम्।	'धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते' (4/4/92)	धर्म + यत्
1.	29.	ततः	पूर्ववतम्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
2.	29	यज्ञियैः	यज्ञमर्हन्तीति।	'यज्ञर्त्विग्भ्यां धखञौ' (5/1/71)	यज्ञ + घ
3.	29.	आर्त्विजीनैः	ऋत्विक्कर्मअर्हन्तीति	'यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ' (5/1/71)	ऋत्विक् + खञ्
1.	30	शिरस्याः	शिरसि भवाः।	'शरीराऽवयवाद्यत्' (5/1/6)	शिरस् + यत्
2.	30	शिरालजङ्घैः	शिराः सन्ति यासां ताः।	'प्राणिस्थादातोलजन्य-तरस्याम' (5/2/93)	शिरस् + लच्
3.	30	गिरिकूटदध्नैः	गिरिकूटाः प्रमाणं येषामिति।	'प्रमाणेद्वयसज्दध्नञ्-मात्रचः' (5/2/37)	गिरिकूट + दध्न च्
4.	30	प्रावृषेण्ये:	प्रावृषि भवाः तैः।	'प्रावृष एण्यः' (4/3/17)	प्रावृष + एण्य
1.	32	अस्त्रचुञ्चुः	अस्त्रैर्वितरिति।	'तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ' (5/2/26)	अस्त्र + चुञ्चुम्
2.	32	गाधेय	गाधेरपत्यं पुमान्।	'इतश्चानिञ्' (4/1/122)	गाधि + ढक्
3.	32	मायाचगम्	मायया वित्तः।	'तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ' (5/2/26)	माया + चणप्
1.	33	शौवस्तिकत्वम्	श्वो भवः इति।	'श्वसष्तुट् च' (4/3/15)	श्वो + ठञ्
				'तस्य भावस्त्वतलौ' (5/1/119)	शौवास्तिक + त्व
4.	34	दाशरथे	दशरथस्यापत्यं पुमान्।	'अत इञ्' (4/1/95)	दशरथ + इञ्
1.	35	राक्षस	रक्ष एव राक्षसः।	'प्रज्ञादिभ्यश्च' (5/4/38)	रक्ष + अण्
2.	35	राजन्यवृत्तिः	राज्ञोपत्यं पुमान् तस्य वृत्ति	'राजश्वशुराद्यत्' (4/4/137)	राजन् + यत्
1.	36	इत्थम्	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1.	37	मानसानि	मनांसि एव मानसानि	'प्रज्ञादिभ्यश्च' (5/4/38)	मनस् + अण्
1.	38	वीरवती	प्रशस्तः वीरः अस्ति यस्यां सा।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	वीर ++ मतुप्
1	39	दैत्य	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्

2.	39	तथा	तेन प्रकारेण इति।	'प्रकारवचने थाल्' (5/3/23)	तत् + थाल्
1	40	मैथिलः	मिथिलाया राजा मैथिलः	'जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्' (4/1/168)	मिथिला + अञ्
1	41	अश्विन्नौ	अश्विन्यां जातौ इत्यर्थे	'सन्धिवेलाद्यृतुनक्षेत्रेभ्योऽण्' (4/3/16)	अश्विन + अण्
1	42	पिनाकी	पिनाकः अस्यास्तीति।	'अत इनिठनौ' (5/2/115)	पिनाक् + इनि्
1	43	पथिकान्	पथेषु कुशलाः।	'तत्र कुशलः पथः' (5/2/63)	पथि + वुन्
1	44	अध्वन्यः	अध्वानमलं गच्छन्तीति	'अध्वनो यत्खौ' (5/2/16)	अध्वन् + यत्
2.	44	वृद्धत्तमः	अतिशयेन वृद्धः इत्यर्थे।	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	वृद्ध + तमप्
3	44	यविष्ठवत्	अतिशयेन युवा इत्यर्थे।	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	युवन् + इष्ठन्
1	45	बहिष्ठकीर्तिः	अतिशयेन बहुला बहिष्ठा।	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	बहुल + इष्ठन्
2	45	प्रेष्ठम्	अतिशयेन प्रियः।	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	प्र+इष्ठन्
3	45	वृन्दिष्ठः	अतिशयेन वृन्दारकः।	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	वृन्द + इष्ठन्
4	45	गरिष्ठम्	अतिशयने गुरवः।	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	गर + इष्ठन्
5	45	वरिष्ठम्	अतिशयेन उरूः	'अतिशायने तमबिष्ठनौ' (5/3/55)	वर् + इष्ठन्

नोट– 'प्रियस्थिरस्फिरोरूबहुलगुरूवृद्धतृप्रदीर्घवन्दारकाणां प्र-स्थ-स्फ-वर्बहि-गर्वषि-त्रप-द्राधिवृन्दाः' (6/4/157) सूत्र से आदेश होंगे।

6.	45	गुरूवत्	गुरूणां तुल्यमिति।	'तेन तुल्यं क्रियाचेद्वतिः' (5/1/115)	गुरू + वति
1	46	त्रिवर्गपारीणम्	त्रिवर्गाणां पारं गामी इति	'अवारपारात्यन्तानुकामं गामी' (5/2/119)	पार + ख
2.	46	विवेकदृश्वत्वम्	विवेकदृश्वम् तस्यभावः	'तस्य भावस्त्वतलौ' (5/1/119)	विवेकदृश्व + त्व
1	47	हिरण्मयी	हिरण्यस्य विकारः इति	दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्वणिक जैह्माशिनेयवाशिनायनिभ्रौण-हत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेय-हिरण्मयानि (6/4/174)	हिरण्य + मयट्
2	47	देवता	देव एव देवता।	'देवात्तल' (5/4/27)	देव + तल

3	47	मैथिली	मैथिलस्य अपत्यं स्त्री।	'अत इञ्' (4/1/95)	मिथिला + इञ्
1	48	विश्वजनीनवृत्तिः	विश्वेभ्योः जनेभ्योहिता	'आत्मन्विश्वजनभोगोत्तर-पदात्खः' (5/1/9)	विश्वजन + ख
2	48	आत्मनीनान्	आत्मने हिता।	'आत्मन्विश्वजनभोगोत्तर-पदात्खः' (5/1/9)'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' (7/1/2) **नोट**-सूत्र से 'ख' के स्थान पर 'ईन' आदेश	आत्मन् + ख
3.	48.	रघुवर्ग्यम्	रघुवंशोत्पन्नानां राज्ञां वर्गः, तत्र भवाः।	'अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्' (4/3/64)	रघुवर्ग + यत्
1	49	अश्वीयम्	अश्वानां समूहः।	'केशाऽश्वाभ्यां यच्छावन्यत्तरस्याम्' (4/2/48)	अश्व + छ
2.	49	राजन्यकम्	राजन्यानां समूहः।	'गोत्रोक्षोष्ट्रोश्भ्रराजन्यराजपुत्रवत्स मनुष्यजाद् वुञ्' (4/2/39)	राजन्य + वुञ्
3.	49	हास्तिकम्	हस्तिनां समूहः।	'अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्' (4/2/47)	हस्ति + ठक्
4.	49	अध्वनीनम्	अध्वानम् अलं गच्छतीति।	'अध्वनोयत् खौ' (5/2/16)	अध्वन् + ख
1	50.	सम्पन्नतालद्वयसः	सम्पन्नतालः, स प्रमाणं यस्य सः।	'प्रमाणेद्वयसज्दध्नञ्मात्रचः' (5/2/37)	सम्पन्नताल + द्वयसच्
2.	50	धनुष्मान्	धनुर्यस्यातीति सः।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	धनुष + मतुप्
3.	50	जामदग्न्यः	जामदग्ने अपत्यं पुमान्	'गर्गादिभ्यो यञ्' (4/1/105)	जामदग्नि + यञ्
4.	50	पुरस्तात्	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	51	राघवम्	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	52	अनेकशः	एकैकवारम् इति।	'संख्यैकवचनाच्चवीप्सायाम्' (5/4/43)	एक + श
2	52	निर्जितराजकः	राज्ञां समूहः इति।	'गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजन्यराजपुत्रवत्स मनुष्याजाद्वुञ्' (4/2/39)	राज्ञ + वुञ्
1	53	यदा	यत् काले इति।	'सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा' (5/3/15)	यत् + दा
2	53	तदा	तत् काले इत्यर्थे।	'सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले' (5/3/15)	तत् + दा
3	53	दाशरथम्	दशरथस्येदम्। इत्यर्थे	'तस्येदम्' (4/3/120)	दशरथ + अण्

3. तृतीय सर्गः

1	2	पौरा:	पुरि भवा:।	'तत्र भव:' (4/3/53)	पू + अण्
1	3	आदीप्तकृशानु-कल्पम्	आ समन्तात् दीप्तश्चासौकृशानु:	'ईशदसमाप्तौ कल्पब्देशय-देशीयर:' (5/3/67)	आदीप्तकृशानु + कल्पप्
1	6	मातामह:	मातु: पिता, मातामह:	'पितृव्यमातुलमातामहपितामहा:' (4/2/36) वार्तिक:- 'मातृपितृभ्यां पितरि डामहच्'	मातृ + डामहच्
1.	7.	स्त्रैणेन	स्त्रीषु भव: स्त्रैण:।	'स्त्रीपुंसाभ्यांनञ्स्नञौ भवनात्' (4/1/87)	स्त्री + नञ्
2	7	लघिम्ना	लघोर्भावो लघिमा तेन।	'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' (5/1/122)	लघु + इमनिज्
1	9	सौमित्रि:	सुमित्राया अपत्यं पुमान्	'बाह्वादिभ्यश्च' (4/1/96)	सुमित्रा + इञ्
2	9	तत:	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	11	जनता	जनानां समूह: इत्यर्थे	'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्' (4/2/43)	जन + तल्
1	13	सर्वदा	सर्वस्मिन्न काले इति।	'सर्वैकान्यकिंयतद: काले' (5/3/15)	सर्व + दा
1	14	तृणवत्	तृणम् तुल्यमिति।	'तेन तुल्यं क्रियाचेद् वति:' (5/1/115)	तृण् + वति
1	15	पौरा:	पूर्ववत्।	पूर्ववत्	पूर्ववत्
2	15	मत्त:	मदिति मत्त:।	'पञ्चम्यातसिल्' (5/3/7)	अस्मद् + तसिल्
1	18	राघवयो:	रघोरपत्ये पुंमासौ।	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	19	राजन्य:	राज्ञामपत्यानि पुमांसौ:	'राजश्वसुराद्यत्' (4/1/137)	राजन् + यत्
1	21	एकत्र	एकस्मिनिति	'सप्तम्यास्त्रल्' (5/3/10)	एक + त्रल्
1	23	बन्धुता	बन्धूनां समूह:।	'ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल' (4/2/43)	बन्धु + तल्
1	24.	नभस्त:	नभस् इति।	'अपादाने चाहीयरूहो:' (5/4/45)	नभस् + तसिल्
1	25	यदा	यस्मिन्न काले।	पूर्ववत्	पूर्ववत्
2.	25	आत्ययिकम्	अत्यय: प्रयोजनं यस्य स:।	'प्रयोजनम्' (5/1/109)	अत्यय + ठञ्
1	26.	समाकुलत्वात्	समाकुलस्य भाव:।	'तस्य भावस्त्वतलौ' (5/1/119)	समाकुल + त्व
1	28	अमात्य:	अमां सह वर्तते इति।	'अत्ययात्त्यम्' (4/2/104) 'अमेहक्वतसित्रेभ्य एव' (वार्तिक-4/2/104)	अमा + त्यप्
1	31	लघुत्वम्	लघोर्भावो इत्यर्थे।	'तस्यभावस्त्वत्तलौ' (5/1/119)	लघु + त्व
1	32	रोरूदावान्		'तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	रोरूदा + मतुप्

2.	32	मत्कम्	अहं ग्रामणीः अस्येति।	'स एषां ग्रामणीः' (5/2/78)	अस्मत + कन्
3.	32.	सहस्त्रशः	अनेक वारं इत्यर्थे।	'बह्वल्पाऽर्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम्' (5/4/42)	सहस्त्र + शस्
1	33	अन्त्याहुतिम्	अन्ते भवा अन्त्या चाऽसौ आहुतिम्।	'दिगादिभ्यो यत्' (4/3/54)	अन्त + यत्
1	34	कास्यम्	कंसीयः, तस्य विकारः–कांस्यम्	'तस्मै हितम्' (5/1/5)	कंस + छ कंसीयः
1	39	यामुनम्	यमुनाया इदम्।	'तस्येदम्' (4/3/120)	यमुना + अण्
1	40	फलवद्विभूत्या	फलानि सन्ति येषुते।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	फल + मतुप् फलवन्तः
1	42	आतिथ्यम्	अतिथये इदम्	'अतिथेर्ज्यः' (5/4/26)	अतिथि + ञ्य्
2.	42	प्रथिम्नः	पृथोर्भावः प्रथिमा।	'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' (5/1/122)	पृथ + इमानिज्
3	42	म्रदिमा	मृदोर्भावो म्रदिमा	'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' (5/1/122)	मृद + इमनिज्
4	42	द्राधिमवन्ति	दीर्घस्य भावो द्राघ्रिमा	'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' (5/1/122) **नोट**–पूर्ववत् 'प्रियस्थिर...' सूत्र से दीर्घ को द्राघ आदेश हो जाता है।	दीर्घ + इमनिज्
				'तदस्याऽस्यस्मिनिति मतुप्' (5/2/34)	द्राघ + इमनिज् द्राधिमा + मतुप्
1	43	तिलोत्तमाद्या	आदौ भवा आद्या	'दिगादिभ्यो यत्' (4/3/54)	आद् + यत्
1	44	प्रीतिमान्	प्रीतिरस्ति यस्य सः	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	प्रीति + मतुप्
1	46	रविमार्गभङ्गः		'अर्श आदिभ्योऽच्' (5/2/127)	रविमार्गभङ्ग + अच्
1	47	सौमित्रिः	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
2	47	शार्ङ्गम्	शृङ्गस्य विकारः।	'अनुदात्तादेश्च' (4/3/140)	शृङ्ग + अञ्
1	48	दाशरथिः	पूर्ववत्	पूव्रवत्	पूर्ववत्
2	48	स्ववर्ग्यान्	स्वसय वर्गः, स्वर्ग तस्मिन् जाताः	'अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्' (4/3/64)	स्ववर्ग + यत्
1	50	राघवः	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	51	कनीयान्	अतिशयेन अल्पः इति।	'द्विवचनविभज्योपपदेतरबीयसुनौ' (5/3/57)	अल्प + ईयसुन्

नोट–'युवाऽल्पयोः कन्यत्तरस्याम्' (5/3/64) सूत्र से 'अल्प' को 'कन्' आदेश। कन् + ईयसुन्

1	52	श्रुती	श्रुतमनेनेति	'इष्टादिभ्यश्च' (5/2/88)	श्रुतम् + इनि

2	52	कृती	कृतमनेनेत्यर्थे	'इष्टादिभ्यश्च' (5/2/88)	कृतम् + इनि
3	52	धीमान्	प्रशस्ता धीरस्ति यस्य सः।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	धीर् + मतुप्
4	52	पैतृकम्	पितुरिदं तत्।	'पितुर्यञ्च' (4/3/79)	पितृ + ठञ्

नोट– 'इसुसुक्तान्तात्कः' (7/3/51) सूत्र से 'ठ' को 'क' आदेश।

1	54	वृद्धौरसाम्	वृद्ध औरसो यस्यासा औरसः–औदर्यः पुत्रः (उरसा निर्मितः इति)	'उरसोऽण् च' (4/4/94)	उरस् + अण्
4	54	धर्म्यम्	धर्मादनपेतम्।	'धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते' (4/4/92)	धर्म + यत्
1	55	ऊर्जस्वलम्	उर्क अस्ति यस्मिन्निति।	'ज्योत्स्नातमिस्रश्रृङ्गिणोर्ज-स्विन्नूर्जस्वलगोमिन्–मलिनमलिमसाः' (5/2/114)	उर्जस् + वलच्
2	55	हस्तिनः	हस्तः अस्ति येषां ते।	'अत इनिठनौ' (5/2/115)	हस्ति + इनि
3.	55	राजन्यकम्	राजन्यानां समूहः	'गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजन्यराजपुत्र-वत्समनुष्याजाद् वुञ्' (4/2/39)	राजन्य + वुञ्
1	56	राघवः	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
2	56	मदीये	मम इमे इत्यर्थे	'वृद्धाच्छः' (4/2/114) 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' (7/1/2)	मद + छ मद् + ईय

चतुर्थ सर्गः

1	4	ब्राह्मया	ब्रह्मण इयमिति।	'तस्येदम्' (4/3/120)	ब्रह्म + अण्
2.	4	शरण्यम्	शरणे साधुरिति	'तत्र साधुः' (4/4/98)	शरण् + यत्
1	8	वासतेयेषु	वसतौ साधूनि तेषु	'पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ्' (4/4/104)	वसत + ढञ्
2.	8	आतिथेयः	अतिथिषु साधुः।	'पथ्यतिथि' सतिस्व्पतेर्ढञ् (4/4/104)	अतिथि + ढञ्
1.	9.	शूल्यम्	शूले संस्कृतम्।	'शूलो खाद्यत्' (4/2/17)	शूल् + यत्
2	9	उख्यम्	उखायां संस्कृतं मॉसम्।	'शूलो खाद्यत्' (4/2/17)	उख् + यत्
3.	9	होमवान्	होमोऽस्ति यस्य सः।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	होम + मतुप्
4	9	सामन्यान्	सामसु साधवः।	'तत्र साधुः' (4/4/98)	सामन् + यत्
1	10	तन्त्रकनिभे	तन्त्रात् (अचिराऽपहृतः)	'तन्त्रादचिरापहृते' (5/2/70)	तन्त्र + कन्
2	10	सर्वाङ्गीणे	सर्वाऽङ्ग व्याप्नुत इति	'तत्सर्वादेः पथ्यङ्ककर्मपत्र पात्रं व्याप्नोति'	सर्वाङ्ग + ख

			ते।	(5/2/7)	
3	10	काण्डीरः	काण्डः (बाणः) अस्यास्तीति	'काण्डाण्डादीरन्नीरचौ' (5/2/111)	काण्ड + ईरन्
4	10	खाड्गिकः	खड्गः प्रहरणमस्य इति।	'प्रहरणम्' (4/4/57)	खड्ग + ठञ्
5	10	तनुत्रवान्	तनुत्रम् इति	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	तनुत्र + मतुप्
6	10	शार्ंगी	शार्गम् अस्य अति	'अत इनिठनौ' (5/2/115)	शार्ंग + इनि
1	11	आशितङ्गवीनानि	आशिताः एषु इति।	अष्डक्षाशितंग्वलंकर्मालंपुरुषाध्युत्तरपदात्खः (5/4/7)	आशित + ख

1	12	व्रातीनव्यालदीप्रास्त्रः व्रातीन	नानाजातीया अनियत व्रत्तयः शरीरायासजीविनो व्राताः (5/2/21)	'तस्येदम्' (4/3/120) 'व्रातेन जीवति' (5/2/21)	व्रात + अण् व्राता + खञ्
2	12	पर्षद्बलान्	पर्षत् अस्ति येषांते।	'रजः कृष्यासुतिपरिच्छदो वलच्' (5/2/112)	पर्षत् + वलच्
3	12	नैकटिकाश्रमान्	निकटे वसन्तीति।	'निकटे वसति' (4/4/73)	निकट + ठक्
1	13	प्रियम्भावुकताम्	प्रियम्भावुकः तस्य भावः	'तस्यभावस्त्वत्तलौ' (5/1/119)	प्रियम्भावुक + तल्
1	14	सन्धयाम्	अहोरात्रस्य सन्धौ भवा (वेला)	'तत्र भवः' (4/3/53)	सन्धि + यत्
2	14	प्रातस्तराम्	अतिशयेन प्रातः।	'द्विवचन विभज्योपपदे तरबीय सुनौ' (5/3/57)	प्रातः + तरप्
3	14	पतत्रिभ्यः	पतत्रमस्ति येषांते पतत्रिणः।	'अत इनिठनौ' (5/2/115)	पतत्रं + इनि
1	15	असकौ	कुत्सिता असौ इति।	'अव्ययसर्वनाम्नांकच्प्राक्टेः' (5/3/71)	अस + अकच्
1	16	बलिभम्	बलयोऽस्मिन् सन्तीति	'तुन्दिबलिवटेर्भः' (5/2/139)	बलि + भ
2	16	कर्णजाहविलोचना	कर्णयोर्मूले।	'तस्य पाकमूले पील्वादिकर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ' (5/2/24)	कर्ण + जाहच्
3.	16	पक्षतौ	पक्षस्य मूलं पक्षतिरतस्याम्	'पक्षात्तिः' (5/2/25)	पक्ष + ति
1	17.	प्रथिमानम्	पृथोर्भावः प्रथिमा।	'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' (5/1/122)	पृथ +

					इमनिज्
1	15	अभीकया	अभीकामयते इति।	‘अनुकाभिकाभीक: कमिता’ (5/2/74)	अभी + कन्
1	18	शंयून्	शम् (सुखम्) अस्ति येषां ते।	‘कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयस:’ (5/2/138)	शम् + युस्
2.	18	स्रग्विणी	स्रगस्ति यस्या: सा।	‘अस्मायामेधास्रजो विनि:’ (5/2/121)	स्रग् + विनि
1	19	अनुका	अनुकामयते इति।	‘अनुकाभिकाभीक: कमिता’ (5/2/74)	अनु + कन्
2	19	प्रियाकर्तुम्	प्रियाकरोति इति।	‘सुखप्रियादानुलोम्ये’ (5/4/63)	प्रियं + डाच्
1	20	सौमित्रे	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
2	20	स्वभोगीनां	स्वस्य भोग:, तस्मै हिता।	‘आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्ख:’ (5/1/9)	स्वस्यभोग + ख
1	21	गौष्ठीने	भूतपूर्वं गोष्ठमिति।	‘गोष्ठात्खञ्भूतपूर्वे’ (5/2/18)	गोष्ठ + खञ्
1	22	दिव्यधर्मिणी	दिवि भवा दिव्या:, तेषां धर्मा:।	‘द्युप्रागपागुद्क्प्रतीचो यत्’ (4/2/101)	दिव् + यत्
2.	22	मानुषान्	मनोरपत्यानि पुमांसौ:।	‘मनोजतिविञ्जयतौ षुक् च’ (4/1/161)	मनुष् + अञ्
1	23.	शीलनत्व	शालाप्रवेशमर्हतीति।	‘शालीनकौपीने अधृष्टा-कार्ययो:’ (5/2/20)	शाला + खञ्
			तस्य भाव:	‘तस्यभावस्त्वत्तलौ’ (5/1/119)	शालीन + त्व
1	24	स्वामी	स्वमस्याऽस्तीति।	‘स्वामिन्नैश्वर्ये’ (5/2/126)	स्व + आमिनच्
2	24	कान्तावान्	कान्ताऽस्ति यस्य स:	‘तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्’ (5/2/94)	कान्ता + मतुप्
3	24	औपकर्णिकलोचन:	कर्णयो: समीपमुपकर्णं तत्र बाहुल्येन भवत:	‘उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्’ (4/3/40)	उपकर्ण + ठक्
1	25	चान्दनिकम्	चन्दनेन सम्पादि।	‘सम्पादिनि’ (5/1/99)	चन्दन + ठञ्
2	25	कार्णवेष्टकिकम्	कर्णवेष्टकाभ्यां सम्पादि।	‘सम्पादिनि’ (5/1/99)	कर्णवेष्ट + ठञ्

3.	25	सर्वकर्मीणौ	सर्वाणि च तानि कर्माणि।	'तत्सर्वादेः पथ्यङ्ककमपत्रपात्रं व्यानोति' (5/2/7)	सर्वकर्म + ख
4	25	औपजानुको	जान्वोः समीपमिति।	'उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्' (4/3/40)	उपजानु + ठक्
1	26	औपनीविकः	नीत्यासमीपमुपनीवि।	'उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्' (4/3/40)	उपनीवि + ठक्
1	29	स्त्रीमान्	प्रशस्ता स्त्री यस्याऽस्ति सः।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	स्त्री + मतुप्
2	29	पुष्यतितराम्	अतीव पुष्यतीति।	'तिङ्श्च' (5/3/56)	पुष्यति + तरप्
1	31	लोलूयावान्	लोलूया अस्ति यस्य सः	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	लोलूया + मतुप्
2.	31	कौक्षेयम्	कुक्षौ भवः।	'द्रतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेढञ्' (4/3/56)	कुक्ष + ढञ्
1	35	दौर्भागिनेयौ	दुष्टं भगं	'स्त्रीभ्योढक्' (4/1/120)	दुर्भग + ढक्
1	36	तापसकात्	तपः अस्याऽस्तीति सः, कुत्सितः तापसः तापसकः, तस्मात्	'अण् च' (5/2/103) 'कुत्सिते' (5/3/74)	तपः+अण् तापस + कन्
1	39	कुतस्त्यम्	कुत आगतम्	'अव्ययात्यप्' (4/2/104)	कुतः + त्यप्
1	43	दाहवतीम्	दाहोऽस्यास्तीति	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	दाह + मतुप्

पञ्चमः सर्गः

1	6	दण्डकान्	दण्डकारण्य प्रदेशान्	'कुत्सिते' (5/3/74)	दण्ड + कन्
1	8	हतबान्धवा	बन्धू एव बान्धवौ।	'तस्येदम्' (4/3/120)	बन्धू + अण्
1	10	प्रमादवान्	नित्यं प्रमादोऽस्ति यस्य सः।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	प्रमाद + मतुप्
2.	10	अत्यन्तीनत्त्वम्	अत्यन्तं गामीति।	'अवारपारायन्तानुकामं गामी' (5/2/11) 'आयनेयी' (7/1/2)	अत्यन्त + ख अत्यन्त + ईन
			अत्यन्तीनस्य भावः।	'तस्यभावस्त्वत्तलौ' (5/1/119)	अत्यन्तीन + त्व

1	11	अग्निचित्वत्सु	अग्निं चितवन्तः तेषु।	‘तसौ मत्वर्थे’ (1/4/19)	अग्निचित + मतुप्
2	11	महेन्द्रियम्	महेन्द्रदेवता सम्बद्धं।	‘महेन्द्राद्घाणौ च’ (4/2/29)	महेन्द्र + घ
2	12	पुरोडाश्यं	पुरोडाशाय हितं		पुरोडाश् + यत्
3	12	औषधम्	औषधिरेव औषधम्।	‘औषधेरजातौ’ (5/4/37)	औषधि + अण्
4	12	हैयङ्गवीनम्	ह्योगोदोहस्य विकारः	‘हैयङ्गवीनं संज्ञायाम्’ (5/2/23)	ह्यग् + खञ् हियङ्
1	13	कालकल्पैः	ईशदसमाप्ताः कालाः ।।	‘ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः’ (5/3/67)	काल + कल्पप्
1	14	साधनीयानि	यस्य साधनाय हितानीति।	‘तस्मै हितम्’ (5/1/5)	साधन + छ
2	14	देवताः	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	15	कुशाऽग्रीयां	कुशस्य अग्रं कुशाऽग्रम्, तम् इव बुद्धिः कुशाग्रीवा	‘कुशाऽग्राच्छः’ (5/3/105)	कुशाग्र + छ
2	15	अनुकामीनताम्	अनुकामं गामी अनुकामीनः।	‘अवारपाराऽत्यन्ताऽनुकामं गामी’ (5/2/11)	अनुकाम + ख
3	15	परम्परीणान्	परान् च परतरान् च अनुभवतीति, ताम्	‘परोवरपरंपरपुत्रपौत्रमनुभवति’ (5/2/10)	परम्परा + ख
1	16	सहायवन्तः	सह अयन्ते इति सहायाः।	‘तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्’ (5/2/94)	सहाय + मतुप्
1	18	योषिद्वृन्दारिका	वृन्दं गुणवृनदमस्ति यस्याः सा।	‘श्रङ्गवृन्दाभ्यामारकन्’	वृनद + कन्
1	21	सुकृती	प्रशस्तं सुकृतम् अस्तीति।	‘अत इनिठनौ’ (5/2/115)	सुकृत + इनि
1	24	याष्टीकव्याहतः	यष्टिः प्रहरणं येषां ते याष्टिका।	‘शक्तियष्टयोरीकक्’ (4/4/59)	यष्टि + ईकक्
1	25	बलीः	बलमस्यास्तीति सः।	‘अतइनि ठनौ’ (5/2/115)	बल + इनि
2	25	शतधा	शतेन प्रकारैः।	‘संख्याया विधार्थेधा’ (5/3/42)	शत + धा
1	26	ऐरावतम्	इरा अस्ति यस्य सः।	‘तत्र भवः’ (4/3/53)	इरावत + अण्
2	26	अनुपयोगित्वात्	उपयोगी अनुपयोगी इति।	‘तस्यभावस्त्वतलौ’ (5/1/119)	अनुपयोगि + त्व
1	29	अतुल्यमहसा	तुलया संमितं।	नौवयोधर्मविषमूलमूलसीतातुला-	तुला + यत्

				भ्यास्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्य।	
1	33	कार्तवीर्य:	कृतवीर्यस्याऽपत्यं पुमान्।	'तस्याऽपत्यम्' (4/1/92)	कृतीवर्य + अण्
2	33	सार्वलौकिकम्	सर्वस्मिन्न लोके विदित:, तम्	'लोकसर्वलोकाट्ठञ्' (5/1/44)	सर्वलोक + ठञ्
1	38	माल्यधारय:	माला एव माल्यानि	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	40	क्षुद्रमानसम्	मन एव मानसम्	पूर्ववत्	मन + अण्
1	41	क्रूब्रह्मयज्ञके	कुत्सितो यज्ञो ते:।	'कुत्सिते' (5/3/74)	यज्ञ + क
2	41	पौरुषम्	पुरुषस्य कर्म।	'हायनान्तयुवादिभ्योऽण्' (5/1/130)	पुरुष + अण्
1	42	क्षत्रियकाऽन्तिके	क्षत्रियस्याऽपत्यं पुमान्	'क्षत्राद्घ:' (4/1/138)	क्षत्र + घ
1	44	नित्यम्	सदैव।	वा.– 'त्यबनेर्ध्रुव इति वक्तव्यम्' नित्य: (4/2/104)	नि + त्यप्
1	45	शीर्षच्छेदां	शीर्षस्य छेद:।	'शीर्षच्छेदाद्यच्च' (5/1/65)	शीर्षछेद + यत्
1	47	अभ्यमित्रीण:	अभ्यमित्रमलं गच्छतीति।	'अभ्यमित्राच्छ च' (5/2/17)	अभ्यमित्र + ख
1	48	हेमरत्नमय:	हेम्नो रत्नानां च विकारो।	'मयऽवैतयोर्भाषायामभक्ष्या–च्छादनयो:' (4/3/143)	हेमरत्न + मयट्
2	48	यथामुखीन:	यथामुखं दर्शन:।	'यथामुखसंमुखस्य दर्शन:–ख:' (5/2/6)	यथामुख + ख
1	55	काकुत्स्थम्	पूर्ववत्	पूर्ववत्	पूर्ववत्
1	60	वशी	वश: (वशीकरणम्)	'अतइनिठनौ' (5/2/115)	वश + इनि
1	61	शिखी	शिखा अस्याऽस्तीति।	'व्रीह्यादिभ्यश्च' (5/2/116)	शिखा + इनि
2	61	अक्षमालावान्	अक्षाणां माला सा अस्थाऽस्तीति।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	अक्षमाला + मतुप्
3	61	मृदलाबुन:	अलाब्वा: विकार: फलमलाबु	'ओरञ्' (4/3/139)	मृदलाबु + अञ्
1	62	मृजावता	मार्जनं मृजा 'मृजू शुद्धौ धातो:'	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	मृजा + मतुप्
2	62	लाक्षिके	लाक्षया रक्ते।	'लाक्षारोचनाट्ठक्' (4/2/2)	लक्ष + ठक्
3	62	दण्डवान्	दण्डोस्याऽस्तीति।	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	दण्ड + मतुप
1	64	क्षपाटताम्	क्षपाटस्य भाव:, ताम्	'तस्य भावस्त्वतलौ' (5/1/119)	क्षपाट + तल्

2.	64	चङ्क्रमावान्	कुटिलं क्रमवमिति	'तदस्याऽस्यस्मिन्निति मतुप्' (5/2/94)	चङ्क्रम + मतुप्
1	65	सांयतनीम्	साये सायं वा भवा।	'सायंचिरप्राह्वेपग्रेऽव्यवेश्यष्ट्यु-ट्युलौ तुट् च' (4/3/23)	साय + ट्यु
2.	65	दिवातनीम्	दिवा भवा, ताम।	'सायंचिरप्राह्वेपग्रेऽव्यवेश्यष्ट्यु-ट्युलौ तुट् च' (4/3/23)	दिवा + ट्यु
3	65	सदातन्या	सदा भवा सदातनी	'सायंचिरप्राह्वेपग्रेऽव्यवेश्यष्ट्यु-ट्युलौ तुट् च' (4/3/23)	सदा + ट्यु
1	66	एकाकिनी	असहाया इत्यर्थे।	'एकादाकिनिच्चासहाये' (5/3/52)	एक + आकिनिच्
1	69	भावत्कम्	भवत्या इदम्।	'भवतष्ठक्छसौ' (4/2/115)	भव + ठक्
1	76	अर्ध्यम्	अर्धार्थमिदर्ध्यम्	'पादाऽधभ्यां च' (5/4/25)	अर्थ + यत्
1	77	महाकुलीनः	महच्च तत्कुलं, तत्र भवो	'महाकुलादञ्खञौ' (4/4/141)	महाकुल + खञ्
2	77	दाशरथिः	दशरथस्याऽपत्यं पुमान्।	'अत इञ्' (4/1/95)	दशरथ + इञ्
3	77	तपस्विनाम्	तपोऽस्ति येषां ते।	'तपः सहस्राभ्यां विनीनी' (5/2/102)	तप. + विनी
1	78	पारश्वधिक रामस्य	परश्वधः प्रहरणमस्यं सः।	'परश्वधाट्ठञ्च' (4/4/58)	परश्वध + ठञ्
1	79	इष्टिनाम्	इष्टमेभिरिति।	'इष्टादिभ्यश्च' (5/2/88)	इष्ट + इनि
2	79	सर्वदा	सर्वस्मिन्न काले।	पूर्ववत्	पूर्ववत्
3	79	राजत्वम्	राज्ञो भावो।	'तस्यभावस्त्वतलौ' (5/1/119)	राज्ञ + त्व
1	84	कानिष्ठनेयस्य	कनिष्ठाया अपत्यं पुमान्।	'कल्याण्यादीनामिनङ' (4/1/126) 'स्त्रीभ्योढक्' (4/1/120)	कनिष्ठ + इनङ् कनिष्ठिन + ढक्
2	84	ज्यैष्ठिनेयम्	ज्येष्ठाया अपत्यं पुमान्।	'कल्याण्यादीनामिनङ' (4/1/126) 'स्त्रीभ्योढक्' (4/1/120)	ज्येष्ठ + इनङ् ज्येष्ठिन + ढक्
1	85	कूपमाण्डूकि	मण्डूकस्याऽपत्यं स्त्री।	'ढक्च मण्डूकात्' (4/1/118)	मण्डूक + इञ्
1	88	कृष्णिमानम्	कष्णस्य भावः कृष्णिमा तं।	'वर्णट्टढादिभ्यः ष्यञ्च' (5/1/123)	कृष्ण + इमनिज्

1	89	समुद्रोपत्यका	पर्वतस्य आसन्ना भूमिरूपत्यका।	'उपाधिभ्यां त्यकनना सन्नारूढयोः' (5/2/34)	समुद्रोप + त्यकन्
2	89	पर्वताऽधित्यका	पर्वतस्योर्ध्वाभूरधि-त्यका।	'उपाधिभ्यां त्यकनना सन्नारूढयोः' (5/2/34)	पर्वत-अधि+ त्यकन्
89	89	हैमी	हेम्नो विकारः।	'प्राणिरजातिभ्योऽञ्' (4/3/153)	हेम्न + अञ्
1	91	पौंस्नि	पुमांसमहंतीति पुंसे हिता वा।	'स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्' (4/1/87)	पुंस + स्नञ् पौस्न् + ङीप्
2.	89	स्त्रैणम्	स्त्रीरर्हतीति स्त्रीभ्यो हितो वा।	'स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्' (4/1/87)	स्त्री + नञ्
3.	91	प्रोष्यपापीयान्	अतिशयेन पापः पापीयान्।	'द्विवचन विभज्योपपदे तरबीय सुनौ' (5/3/57)	पाप + ईयसुन्
1	94	प्रातिकूलिकीं	प्रतिकूलं वर्तत इति तां	'तत्प्रत्युनुपूर्वमीपतोमकूलम्' (4/4/28)	प्रतिकूल + ठक्
1	97	जघन्यानाम्	जघन मिव जघन्यास्तेषां।	'शाखादिभ्यो यः' (5/3/103)	जघव + य
1	101	सर्वपथीनम्	सर्वपथान व्याप्नोती इति।	'तत्सर्वादेः पथ्यङ्कमपत्रपात्रं त्याप्नोति' (5/2/7)	सर्वपथ + ख
1	103	पिशाचमुखधौरेयम्	धुरं (भारं) वहन्तीति	'धुरो यड्ढकौ' (4/4/77)	धुर + ढक्
2	103	कद्रथवत्	कद्रथेन तुल्यमिति	'तेन तुल्यं क्रियाचेद्वतिः' (5/1/115)	कद्रथ + वति
1	108	भीमधुर्यम्	धुरं वहन्तीति धुर्याः।	पूर्ववत्	पूर्ववत्

3. 'भट्टिकाव्यम्' में तद्धित प्रत्ययांत शब्दों में प्रयुक्त तद्धित प्रत्ययों का अनुबन्ध विमर्श

यञ् – यञ् में ञकार हलन्त्यम् से इत्संज्ञक है। 'ञ्' का अनुबन्ध ''तद्धितेष्वचामादेः'' से आदि वृद्धि के लिए जोड़ा गया है।

बहिस् + यञ्

बहिस् + य — 'ञ' का अनुबन्ध

बह् + य = — 'वहिषष्टिलोपो यञ् च' से टि का लोप

बाहयः — ''तद्धितेष्वचामादे'' से आदि वृद्धि

अञ् – अञ् में अकार 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञक है ञ् का अनुबन्ध आदि वृद्धि के लिए है।

देव + अञ् =

दैवम् 'ञ्' का अनुबन्ध, आदि वृद्धि

अण् – अण् में णकार 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञक है तथा 'ण' का अनुबन्ध आदि वृद्धि के लिए हैं। अञ् व अण् प्रत्ययों में स्वर का अन्तर पड़ता है यदि अण् होगा तो शब्द अन्तोदात्त होता है अञ् हो तो आद्युदात्त होता है।

अश्वपति + अण्

आश्वपत् + अ ण् का अनुबन्ध, आदि वृद्धि, इकार लोप,

आश्वपतम् –

नञ्, स्नञ्, में भी 'ञ्' अनुबन्ध आदि वृद्धि के लिए होता है।

स्त्री + नञ् = स्त्रैणः

ढक् – ढक् में अन्त्य ककार इत्संज्ञक है ककार का अनुबन्ध 'किति च' सूत्र से आदि वृद्धि के लिए जोड़ा है तथा ''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् सूत्र से ढ् को एय् होता है।

कुक्ष + ढञ् 'ञ्' का अनुबन्ध, आदि वृद्धि

कौक्ष् + एय ढ् को एय्, 'यस्येति च' सूत्र से अ का लोप

कौक्षेयम्

यत् – यत् में तकार का अनुबन्ध होता है तथा 'तित् स्वरितम्' (6/1/179) द्वारा स्वरित स्वर के लिए जोड़ा गया है।

राजन् + यत् 'त' का अनुबन्ध

राजन्यः

ड्यण् – 'ड्' का अनुबन्ध 'चुटू' सूत्र से तथा ण् का अनुबन्ध हुआ। डकार का अनुबन्ध 'टेः' सूत्र से 'टि' का लोप के लिए तथा णकार का अनुबन्ध आदि वृद्धि के लिए

पाण्डु + ड्यण्

पाण्डु + य ड् एवं ण् का अनुबन्ध

पाण्ड् + य 'टेः' से टि का लोप

पाण्ड्यः

ट्यण् – ट्यण् के ट् की चुटू तथा ण् की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा 'य' शेष। टकार अनुबन्ध 'टिड्ढाणञ्द्वयसज्दध्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः' सूत्र से स्त्रीत्व में ङीप् प्रत्यय तथा णकार अनुबन्ध आदि वृद्धि के लिए है।

सोम + ट्यण्

सोम + य   ट् एवं ण् का अनुबन्ध

सौम्यम्   आदिवृद्धि में अकार लोप

डामहच् – प्रत्यय के ड् का अनुबन्ध 'टे:' सूत्र से टि लोप के लिए तथा 'च्' का अनुबन्ध स्वरित के लिए किया है।

मातु + डामहच्

मातु +आमह   ड् एवं च् का अनुबन्ध

मातामह: टि का लोप

तल् – प्रत्यय में लकार की इत्संज्ञा होकर लुप्त हो जाता है। 'त' शेष रहता है। तलन्त का प्रयोजन स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय होता है।

जन + तल्

जन + त   ल् का अनुबन्ध

जनता   टाप् (आ) तथा सवर्ण दीर्घ होकर

ठक् – प्रत्यय का क् इत्संज्ञक होने से 'किति च' सूत्र से आदि वृद्धि। ठस्येक: से ठ को इक आदेश।

उपनीवि + ठक्

उपनीवि + ठ   'क' का अनुबन्ध

औपनीविक: आदि वृद्धि तथा ठ को इक, 'यस्येति च' सूत्र से इकार लोप

ड्मतुप् – प्रत्यय के डकार की, अन्त्य पकार की एवं उ की इत्संज्ञा होकर लोप होता है। मत् शेष रहता है। 'ड' का अनुबन्ध 'टे:' सूत्र से टिका लोप हेतु,पकार अनुबन्ध अनुदात्त स्वर के लिए एवं उकार अनुबन्ध उगित को नुम् के लिए किया गया है।

कुमुद + ड्मतुप्

कुमुद + अत: प् उ एवं ड् का अनुबन्ध

कुमुद + वत्   टि (अ) का लोप, 'झय:' से मत् को वत्

कुमुद्वत्   प्रथमा एकवचन में नुम् का आगम आदि कार्य

कुमुद्वान्

वुन् – प्रत्यय के न् का अनुबन्ध 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' (6/1/191) सूत्र द्वारा आद्युदात्त किया जाता है तथा 'वु' को ''युवोरनावौ'' सूत्र से वु को 'अक' आदेश होता है।

पद + वुन

पदक: न् का अनुबन्ध तथा वु को अक

मतुप् – मतुप् के प् एवं उ की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है। 'प' का अनुबन्ध अनुदात्त स्वर के लिए तथा 'उ' का अनुबन्ध उगित होने से नुम् एवं स्त्रीलिंग में 'ङीप्' के लिए किया गया है।

गो + मतुप्

गो + मत् प् एवं उ का अनुबन्ध

गोमान् पुल्लिंग में, नुम् का आगम होकर

गोमत् + ङीप् स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय 'उगितश्च' से

गोमती

ड्वलच् – ड्वलच् के डकार और चकार अनुबन्ध है इन का लोप होकर 'वल्' मात्र शेष रहता है। प्रत्यय का डित्करण टिलोपार्थ तथा चित्करण अन्तोदात्तस्वरार्थ किया है।

जैसे – नड + ड्वलच्

नड्वलः = ड् एवं च् का अनुबन्ध तथा टि का लोप

खञ् – खञ् में ञ् का अनुबन्ध आदि वृद्धि के लिए किया गया है तथा 'ख' को ईन आदेश होता है।

ग्राम + खञ्

ग्राम + ख ञ् का अनुबन्ध

ग्रामीणः ख को ईन तथा 'यस्येति च' सूत्र से अकार लोप

त्यप् – त्यप् के 'प्' का अनुबन्ध किया गया है।

अमा + त्यप्

अमात्यः 'प्' का अनुबन्ध

छ – 'छ' को ईय आदेश होता है।

तद् + छ

तद् + ईय = तदीयः

एण्य – अजादि होने से अकार इकार लोप होता है।

प्रावृष् + एण्य

प्रावृषेण्यः

ट्युल् – ट्युल् के ट् एवं ल् की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है ट् का अनुबन्ध स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय के लिए होता है। 'यु' को अन हो जाता है तथा तुक् का आगम होता है।

सना + ट्युल्

सना + यु ट् एवं ल् का अनुबन्ध

सनात् (तुक्) अन, यु को अन एवं तुक् (त्) का आगम

सनातन:

यत् – यत् प्रत्यय में तकार अनुबन्ध स्वरार्थ जोड़ा गया है।

धर्म + यत्

धर्म + य त् का अनुबन्ध

धर्म्यम् अकार लोप होकर

'ख' – आत्मन् + ख

आत्मन् ई (ईन)

आत्मनीनम्

तमप् – तमप् के पकार का अनुबन्ध ''अनुदातौ सुप्पितौ'' सूत्र द्वारा अनुदात्त स्वर के लिए जोड़ा गया है।

लघु + तमप्

लघुतम: 'प्' का अनुबन्ध

इष्ठन् – इष्ठन् में नकार का अनुबन्ध ञ्नित्यादिर्नित्यम् (6/1/192) द्वारा उदात्त स्वर के लिए जोड़ा गया है।

लघु + इष्ठन्

लघु + इष्ठ न् का अनुबन्ध

लघिष्ठ: टि का लोप

कल्पप् – का अन्त्य पकार इत्संज्ञक है स्वरार्थ जोडे गये है–

विद्वस् + कल्पप्

विद्वस् + कल्प पकार का अनुबन्ध

विद्वत्कल्प:

शस् – में शकर की इत्संज्ञा नहीं होती क्योंकि तद्धित है तथा स् की भी प्रयोजनाभाव से 'हलन्त्यम्' द्वारा इत्संज्ञा नहीं अत: शस् पूरा ही रहता है।

सहस्त्र + शस्

सहस्त्रश:

तसि – तसि में अनुनासिक इकार इत्संज्ञक होकर लुप्त हो जाता है तस् शेष इकार अनुबन्ध सकार को इत् से बचाने के लिए जोड़ा गया है।

मध्य + तसि

मध्यत: इकार का अनुबन्ध

अकच् – अकच् के क के अ एवं अन्त्य च की इत्संज्ञा होकर लोप होता है।

युष्मद् +अकच् +ओस्

युष्मद् + अक् + ओस्   अ एवं च् का अनुबन्ध

युव अद् + अक् + ओस   युष्म सको युव, द को य

युवकयोः

वति – वति का इकार की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है वत् शेष रहता है। इकार अनुबन्ध उगित होने से नुम् एवं स्त्रीलिंग में ङीप् लिए जोड़ा है।

धन + वति

धनवत्   इकार का अनुबन्ध

इमनिच् – इमनिच् का अनुनासिक इकार और अन्त्य चकार इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है इमन् शेष रहता है। चकार अनुबन्ध स्वरार्थ जोड़ा गया है और इकार अनुबन्ध 'उगितश्च' सूत्र से ङीप् एवं नुम् के आगम के लिए जोड़ा गया है।

लघु + इमनिच्

लघु + इमन्   इ एवं च् का अनुबन्ध

लघिमन्   टि लोप होकर

ष्यञ् – ष्यञ् के ष् एवं ञ् की इत्संज्ञा होकर लोप होता है ञ् का अनुबन्ध आदि वृद्धि के लिए तथा षित् होने से स्त्रीलिंग में ङीप् प्रत्यय होता है।

कुशल + ष्यञ्

कुशल + य   ष् एवं ञ् का अनुबन्ध

कौशल्यम्   आदिवृद्धि एवं अकार लोप होकर

द्वयसच्, दध्नच् और मात्रच् – इन तीनों का अन्त्य चकार इत् है तथा लोप हो जाता है चकार 'अनुबन्ध चितः' सूत्र (6/1/175) द्वारा अन्तोदात्त स्वर के लिए जोड़ा है।

जानु + द्वयसच्

जानुद्वयसम्   च का अनुबन्ध

ऊरू + दध्नच्

ऊरूदघ्नः   च् का अनुबन्ध

इनि – इनि में इकार उच्चारणार्थ एवं नकार की इत्संज्ञा से बचाने के लिए जोड़ा गया है 'इन्' शेष रहता है।

श्रुत + इनि

श्रुतिन्   इ का अनुबन्ध, 'यस्येति च' सूत्र से अकार लोप

श्रुती

विनि – विनि में नकारोत्तर इकार अनुबन्ध है जो नकार को इत्संज्ञा से बचाने के लिए जोड़ा गया है। विन् शेष रहता है।

यशस् + विनि

यशस् + विन्   इ का अनुबन्ध

यशस्वी   पुल्लिंग एकवचन

युस् – युस् का सकार इत्संज्ञक होकर लुप्त हो जाता है यु शेष रहता है। स् का अनुबन्ध सित्त्व करके 'सितिच' सूत्र से पद संज्ञा करना है।

शुभम् + युस्

शुभंयुः   'स्' का अनुबन्ध

तसिल् – तसिल् में इकार और लकार इत्संज्ञक होकर लुप्त हो जाते हैं, तस् मात्र शेष रहता है। 'लितिः' सूत्र से उदात्तस्वार्थ जोड़ा गया है।

परि + तसिल्

परितस्   ल् एवं इ का अनुबन्ध

परितः   स् को विसर्ग

त्रल् – त्रल् का लकार इत्संज्ञक होकर लुप्त हो जाता है 'त्र' शेष रहता है। लकार अनुबन्ध 'लितिः' सूत्र द्वारा उदात्तत्व विधान के लिए जोड़ा गया है।

बहु + त्रल्   सर्व + दा

बहुत्र   ल् का अनुबन्ध   सर्वदा

थाल् – थाल का लकार इत् है, था शेष रहता है लित्स्वर के लिए जोड़ा गया है।

सर्व + थाल्

सर्वथा   ल् का अनुबन्ध

थमु – थमु का उकार इत्संज्ञक है, थम् मात्र शेष रहता है। 'म' की इत्संज्ञा बचाने के लिए 'उ' का अनुबन्ध किया जाता है।

इदम् + थमु

इत्थम्   'उ' का अनुबन्ध

संदर्भ सूची

1 वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी–श्रीस्वामिनारायणश्रितै:श्रीमत् 'श्रीकृष्णस्वरूप' काव्यतीर्थै:, संशोधिता (गोकुलदास संस्कृतग्रंथमाला–6) पृ.सं.–80 सूत्र संख्या 4/3/23
2 वही 5/1/115
3 वही 5/3/23
4 वही 5/3/67
5 वही 5/3/67
6 वही 5/4/76
7 वही 4/4/92
8 वही 4/1/4
9 वही 5/2/94
10 वही 5/2/121
11 वही 4/2/49
12 वही 5/2/35
13 वही 5/3/39
14 वही 4/4/98
15 वही 4/4/105
16 वही 4/1/172
17 वही 5/3/7
18 वही 5/4/45
19 वही 5/2/115
20 वही 5/3/55
21 वही 5/2/94
22 वही 5/3/7
23 वही 5/2/180
24 वही 4/3/120
25 वही 5/1/119
26 वही 5/3/27
27 वही
28 वही 5/3/24
29 लघुसिद्धांतकौमुदी पृष्ठ सं.–397, वार्तिक संख्या–96
30 वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी–श्री स्वामिनारायणनाश्रितै: श्रीमत् 'श्रीकृष्णस्वरूप' काव्यतीर्थै: संशोधिता (गोकुलदास संस्कृत ग्रंथमाला–6) सूत्र संख्या–4/1/115
31 वही 4/1115
32 वही 5/1/109
33 वही 52/115
34 वही 5/2/121
35 वही 5/1/119
36 वही 3/3/67
37 वही4/2/87
38 वही 5/2/94
39 वही 5/2/94
40 वही4/1/92
41 वही5/2/105
42 वही5/1/117
43 वही 5/2/115

44 वही 5/3/10
45 वही 5/4/26
46 वार्तिक संख्या – 5/1/124
47 सूत्र संख्या–4/1/85
48 वही 4/1/92
49 वही 4/4/92
50 वही 5/1/71
51 वही 5/1/71
52 वही 7/1/2
53 वही 5/1/6
54 वही 5/2/93
55 वही 5/2/37
56 वही 4/3/17
57 वही
58 वही 5/2/26
59 वही 4/1/122
60 वही 5/2/26
61 वही 4/3/15
62 वही 5/1/119
63 वही 4/1/95
64 वही 5/4/38
65 वही 4/1/137
66 वही 5/4/38
67 वही 5/2/94
68 वही 5/3/23
69 वही 4/1/168
70 वही 4/3/16
71 वही 5/2/115
72 वही 5/2/63
73 वही 5/2/16
74 वही 5/3/55
75 वही 5/3/55
76 वही 6/4/157
77 वही 5/3/55
78 वही 5/3/55
79 वही 5/3/55
80 वही 5/1/115
81 वही 5/2/110
82 वही 5/1/119
83 वही 6/4/174
84 वही 5/4/27
85 वही 4/1/95
86 वही 5/1/9
87 वही 4/3/64
88 वही 4/2/48
89 वही 4/2/39

90 वही 4/2/47
91 वही 5/2/16
92 वही 5/2/37
93 वही 5/2/94
94 वही 4/1/105
95 वही 5/4/43
96 वही 4/2/39
97 वही 5/3/15
98 वही 4/3/120
99 वही 4/3/53
100 वही 5/3/67
101 वही 4/2/36
102 वही 4/1/87
103 वही 5/1/122
104 वही 4/1/96
105 वही 4/2/43
106 वही 5/3/15
107 वही 5/1/115
108 वही 5/3/7
109 वही 4/1/137
110 वही 5/3/10
111 वही 4/2/43
112 वही 5/4/45
113 वही 5/1/109
114 वही 5/1/119
115 सूत्र संख्या 4/2/104 की वार्तिक
116 वही 5/1/119
117 वही 5/2/94
118 वही 5/4/42
119 वही 5/4/42
120 वही 4/3/54
121 वही 4/3/120
122 वही 5/2/94
123 वही5/4/26
124 वही 5/1/122
125 वही 6/4/161
126 वही 5/1/122
127 वही 6/4/157
128 वही 4/3/54
129 वही 5/2/94
130 वही 5/2/127
131 वही 4/3/140
132 वही 4/3/64
133 वही 5/3/57
134 वही 5/3/64
135 वही 5/2/88

136 वही 5/2/94
137 वही 4/3/79
138 वही 4/4/94
139 वही 4/4/92
140 वही 5/2/114
141 वही 5/2/115
142 वही 4/2/114
143 वही 7/1/2
144 वही 4/3/120
145 वही 4/4/98
146 वही 4/4/104
147 वही 7/1/2
148 वही 4/4/104
149 वही 4/2/7
150 वही 5/2/94
151 वही 4/4/98
152 वही 5/2/70
153 वही 5/2/7
154 वही 5/2/111
155 वही 4/4/57
156 वही 5/2/94
157 वही 5/2/115
158 वही 5/4/7
159 वही 4/3/120
160 वही 5/2/21
161 वही 4/4/73
162 वही 5/1/119
163 वही 4/3/53
164 वही 5/3/57
165 वही 5/2/115
166 वही 5/3/71
167 वही 5/2/74
168 वही 5/2/139
169 वही 5/2/24
170 वही 5/2/25
171 वही 5/1/122
172 वही 5/2/138
173 वही 5/2/121
174 वही 5/2/74
175 वही 5/4/63
176 वही 5/1/9
177 वही 5/2/18
178 वही 7/1/2
179 वही 4/2/101
180 वही 5/2/132
181 वही 4/1/161

182 वही 5/2/20
183 वही 5/2/126
184 वही 5/2/94
185 वही 4/3/40
186 वही 5/1/99
187 वही 5/1/99
188 वही 5/2/7
189 वही 4/3/40
190 वही 4/3/40
191 वही 5/2/94
192 वही 5/3/56
193 वही
194 वही 5/2/94
195 वही 4/3/56
196 वही 4/1/120
197 वही 4/1/126
198 वही 4/1/120
199 वही 5/2/103
200 वही 5/3/74
201 वही 4/2/104
202 वही 5/2/94
203 वही 5/4/54
204 वही 5/3/74
205 वही 5/3/74
206 वही 4/3/120
207 वही 5/2/94
208 वही 5/2/94
209 वही 2/2/11
210 वही 7/1/2
211 वही 1/4/19
212 वही 4/2/29
213 वही 5/1/4
214 वही 5/1/4
215 वही 5/4/37
216 वही 5/2/23
217 वही 5/3/67
218 वही 5/1/5
219 वही 7/1/2
220 वही 5/3/105
221 वही 5/2/11
222 वही 5/2/10
223 वही 5/2/10
224 वही 5/2/94
225 वही
226 वही 5/2/115
227 वही 4/1/112

228 वही 4/4/59
229 वही 5/2/15
230 वही 5/3/42
231 वही 5/2/94
232 वही 5/1/119
233 वही 4/1/4
234 वही 4/4/91
235 वही 4/1/92
236 वही 5/1/44
237 वही 5/3/74
238 वही 5/1/130
239 वही 4/1/138
240 वही 7/1/2
241 वही
242 वही
243 वही 5/1/65
244 वही 5/2/17
245 वही 7/1/2
246 वही 4/3/143
247 वही 5/2/6
248 वही 5/1/127
249 वही 7/1/7
250 वही 5/2/115
251 वही 5/2/116
252 वही 5/2/94
253 वही 4/3/39
254 वही 5/2/94
255 वही 4/2/2
256 वही 5/2/94
257 वही 5/1/119
258 वही 5/2/94
259 वही 4/3/23
260 वही 7/1/1
261 वही 5/3/52
262 वही 4/2/115
263 वही 5/4/25
264 वही 4/1/141
265 वही 7/1/2
266 वही 5/2/102
267 वही 5/2/88
268 वही 5/1/119
269 वही 4/1/126
270 वही 4/1/120
271 वही 7/1/2
272 वही 4/1/118
273 वही 5/1/123

274 वही 5/2/34
275 वही 5/2/34
276 वही 4/3/153
277 वही 7/2/117
278 वही 4/1/87
279 वही 4/1/87
280 वही 5/3/57
281 वही 4/4/28
282 वही 5/3/103
283 वही 5/2/7
284 वही 7/1/2
285 वही 4/4/77
286 वही 5/1/115